₹ २०

ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

वैशाख २०७६ मई २०१९

Think IAS...
दृष्टि The Vision
Think Drishti
दिल्ली शाखा
सामान्य अध्ययन
ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच प्रारंभ
24 अप्रैल
दोपहर 3:00 बजे
अगर आप इस बैच में एडमिशन लेना चाहते हैं तो पहले ही स्थान आरक्षित कराएँ।
641, Ist Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-9
E-mail: online@groupdrishti.com
87501 87501, 011-47532596
प्रयागराज शाखा
निःशुल्क सेमिनार
14 अप्रैल
प्रातः 11:30 बजे
विषय :
कैसे करें IAS व UPPCS की तैयारी?
द्वारा
डॉ. विकास दिव्यकीर्ति
UPPCS मेन्स क्रैश कोर्स
20 अप्रैल
प्रातः 11:00 बजे
ऑनलाइन व ऑफलाइन कक्षाएँ
सांकेतिक शुल्क : ₹1000
प्रतिदिन 5-6 घंटों की क्लास
कुल 100-120 घंटों की कक्षाएँ
Tashkent Marg, Patrika Chauraha, Civil Lines, Prayagraj
allahabad@groupdrishti.com
www.drishtiias.com
8448485518, 8750187501, 8130392359

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

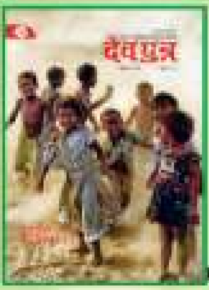

वैशाख	२०७६	▪ वर्ष ३९
मई	२०१९	▪ अंक ११

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३२९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com
editordevputra@gamail.com

सीधे 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के खाते में राशि जमा करने हेतु -
खाता संख्या - 53003592502
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

शहीदों पर जज बोले- ऐसे कई मरते हैं, किस का शोक मनाऊं

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

कहते हैं जब व्यक्ति संकट और संघर्ष की स्थिति में होता है तो अपने-पराए पहचानने में सुविधा हो जाती है। यही कुछ राष्ट्र के साथ भी होता है। संघर्ष के समय राष्ट्रभक्त और राष्ट्रद्रोही दोनों अपने खोल से बाहर आ जाते हैं। वैसे भी राष्ट्र के प्रति निष्ठा और समर्पण का धन और पद से कोई संबंध नहीं होता।

पिछले दिनों आतंकियों ने पुलवामा में हमारी सेना के ४० जवानों की नृशंस हत्या कर दी। भारत ने पड़ोसी देश को मुँहतोड़ उत्तर भी दिया। इसी मध्य समाचार पत्र में पढ़ा कि राजस्थान के एक न्यायालय में न्यायाधीश महोदय ने वकीलों द्वारा आयोजित श्रद्धांजलि सभा में जाने से मना कर दिया और कहा- "ऐसे तो सैनिक रोज मरते हैं, मैं किस किस का शोक मनाऊँ?"

अब इन पढ़े लिखे उच्च पदस्थ व्यक्ति का उत्तर क्या दें? किन्तु इसी मध्य दो समाचार और दिखाई दिए जो स्वयं उत्तर हैं। प्रथम तो दक्षिण भारत के एक गरीब मजदूर द्वारा अपनी परिश्रम पूर्वक अर्जित पूरी बचत सैनिक कल्याण हेतु अर्पित कर दी गई। दूसरा गुजरात में सायकल से सड़कों पर चाय बेचने वाले एक सामान्य व्यक्ति ने अपने पूरे दिन की आय सैनिकों को समर्पित करने का निश्चय किया। मुझे लगता है कि ये दोनों सामन्यजन ही असली भारत हैं। धन, संपत्ति, प्रसिद्धि और पद इसी देश से अर्जित किए हैं यदि ये सब भी देश पर न्यौछावर करना पड़े तो पीछे कदम नहीं हटे। दोनों महापुरुषों को विनम्र प्रणाम।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

अनुक्रमणिका

कहानी

- स्वीकार है दान - अरविन्द कुमार साहू ०५
- लटकन और ननकू... - इंजी. आशा शर्मा १०
- समझदार लड्डू - डॉ. चेतना उपाध्याय १८
- पेंसिल बाक्स - यशी २४
- कोयल फिर बोली - सुशील सरित ३६

लघुकथा

- खिलौने और भोला - मीरा जैन ५०

लोककथा

- चुन्नू की टोपी - डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव ४०

आलेख

- आद्य शंकराचार्य - निलेश परसाई १५
- फलों का राजा आम - राजकुमार जैन २२

प्रसंग

- हृदय परिवर्तन - श्यामसुन्दर सुमन ०९
- सच्ची बात - पुष्पेश कुमार 'पुष्प' २८

पत्र

- प्रिय बेटी! - डॉ. विमला भण्डारी १२

कविता

- उल्टा पुल्टा - गौरव गुप्ता १४
- भारत के फौजी - गोविन्द भारद्वाज १६
- सप्ताह के दिन - सुरेश कुमार 'तन्मय' २६
- बचपन संग खेलें - डॉ. कृपाशंकर शर्मा 'अचूक' २७
- मामा के गाँव चलेंगे - नरेन्द्र मण्डलोई 'माण्डलिक' ३२
- माता पिता - श्रीराम मीना ३५
- चिड़िया - भानुप्रताप सिंह ३९

चित्रकथा

- राम का उपहार - देवांशु वत्स १७
- ऐसे हुई चोरी - संकेत गोस्वामी २९
- आधा अल्पाहार - देवांशु वत्स ४५

प्रकल्प परिचय

- विद्यालय में कौशल - शैलेन्द्र विक्रम ४७

बाल प्रस्तुति

- आलस्य का दुष्परिणाम - किसलय हर्ष ३३
- पहेलिया - जयेन्द्र ३४

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - २०
- गाथा वीर शिवाजी की (२७) - ३८
- आपकी पाती - ४२
- चुटकुले - ४३
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल ४४
- पुस्तक परिचय - ४६

रचनाकारों से निवेदन

सभी बाल रचनाकारों एवं साहित्यकारों से निवेदन है कि यदि आप देवपुत्र में प्रकाशन हेतु अपनी रचना अणुडाक (E-mail) से भेजना चाहते हैं तो कृपया अपनी रचना-

editordevputra@gmail.com पर भेजिए।

अब से devputraindore@gmail.com का उपयोग केवल सदस्यता एवं व्यवस्था कार्यों के लिए किया जाना अपेक्षित है।

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं?

तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।

विवरण इस प्रकार है-

खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास**

बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर**

खाता क्रमांक - **53003592502**

IFSC- **SBIN0030359**

राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के मेल ID devputraindore@gmail.com पर अवश्य भेजिए।

नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है।

उदाहरण के लिए -

सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए -

"**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

(वैशाख पूर्णिमा, बुद्ध जयंतीः १८ मई पर विशेष)

स्वीकार है दान

कहानी : अरविन्द कुमार साहू

आज पाटलिपुत्र की गलियों में भारी चहल-पहल थी। जिसे देखो वही नगर के बाहर की ओर पोटली में अन्न, वस्त्र या धन लिये चला जा रहा था। लगता था कोई भी इस सुअवसर को गँवाना नहीं चाहता। लोग आपस में बातें कर रहे थे। एक दूसरे से पूछने या बताने को बैचेन थे।

''अरे, सुना है तथागत पधारे हैं, सब उन्हीं के दर्शन के लिए दौड़े जा रहे हैं।''

''क्या कहा तथागत? स्वयं भगवान बुद्ध हमारे राज्य में पधारे हैं।''

''हाँ भाई हाँ, तथागत नये अनुयायियों को दीक्षा दे रहे हैं तथा संघ के लिए दान भी स्वीकार कर रहे हैं।''

''अच्छा? कहाँ ठहरे हैं प्रभु?''

लोग आपस में पता भी पूछते-बताते जा रहे थे, उँगली से रास्ते की ओर संकेत करते हुए।

''अरे वहाँ... नगर के बाहर, आम्रपाली के विशाल उपवन में। स्वयं महाराज बिंबसार भी सोने-चाँदी से जड़े अमूल्य रत्न लेकर तथागत को दान देने के लिए पहुँच चुके हैं।''

''अच्छा! ऐसा है? तो क्या भगवान निर्धनों के भी दान स्वीकार करते हैं?'' - एक निर्धन व दरिद्र दिखने वाले व्यक्ति ने पूछा।

''हाँ भाई - भगवान की दृष्टि में कोई धनी या निर्धन नहीं है। राजा हो प्रजा, रंक हो या सेठ, वे सभी को समान रूप से उपदेश देते हैं। सभी का प्रेम और स्नेह समान रूप से स्वीकार करते हैं। सभी को पंचशील का पालन करने को प्रेरित करते हैं।''

''ये पंचशील क्या है बन्धु?'' किसी जिज्ञासु ने राह चलते ही पूछ लिया।

''संक्षेप में समझ लो कि पंचशील वे सिद्धांत हैं जो मनुष्य को सामाजिक और सुयोग्य बनाते हैं। अस्तेय, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सत्य और मादक द्रवों का त्याग। तथागत कहते हैं कि चोरी मत करो, जीव हिंसा मत करो, अनावश्यक संग्रह मत करो, सभी से समान रूप से प्रेम करो आदि। संघ कार्य तथागत के उपदेशों को सम्पूर्ण विश्व में फैलाना है।''

नगर के मुख्य फाटक के बाहर, एक कौने में चिथड़े में लिपटी एक बूढ़ी भिखारिन खड़ी थी। आज सुबह से उसको भिक्षा में कुछ नहीं मिला था। वह जिस आम के पेड़ की छाया में थी, उसी से अभी-अभी एक पका हुआ फल टपका था। भूखी बुढ़िया ने उस आम को पाते ही झपटकर मुँह से लगा लिया।

उसने आम खाना शुरु ही किया था कि ये संवाद सुनकर वह चौंक पड़ी थी। आम खाते हुए उसके हाथों ज्यों के त्यों रुक गए थे।

वह बरबस ही चहक कर कहने लगी- ''अरे, यह तो बड़े पुण्य का कार्य है। मुझे भी तथागत के दर्शन करके अपना जीवन धन्य बनाना चाहिए और संघ के इन पुनीत कार्य में कुछ दान भी अवश्य देना चाहिए।''

मन में विचार आते ही वह भिखारिन भी भीड़ के

साथ चल पड़ी। भारी उत्साह के कारण उसका कमजोर शरीर जैसे हवा में उड़ रहा था। तथागत का अलौकिक आकर्षण उसे चुंबक की तरह अपनी ओर खींचता जा रहा था।

तथागत के आश्रय स्थल तक पहुँचकर वह ठिठक गयी। चारों ओर श्रद्धालुओं की भीड़ थी। बीच में एक रास्ता जा रहा था। भिखारिन ने दूर से देखा, ...तथागत भगवान बुद्ध एक विशाल वृक्ष के नीचे भूमि पर ही आसन लगाये बैठे थे। उनका शरीर दिव्य आभा से चमक रहा था। मुखमंडल पर एक अलौकिक शान्ति छाई हुई थी। उनके दर्शन करके वह निहाल हो गई। लगा कि यहाँ तक पहुँचने में हुई सारी थकान छू-मंतर हो गई है।

लोग पंक्ति बद्ध होकर आगे बढ़ रहे थे। तथागत से एक निश्चित दूरी पर अपना लाया हुआ सामान रखते, फिर प्रणाम करते हुए दान स्वीकार करने की प्रार्थना करते। भगवान बुद्ध अपने आसन से हाथ उठाकर दान स्वीकार करने का संकेत करते, आशीर्वाद देते। एक श्रद्धालु वापस मुड़ता, दूसरा फिर आगे आ जाता। सोना-चाँदी, वस्त्र-धन, अन्न व फल आदि का ढेर लगा हुआ था।

भिखारिन आश्चर्य से देख रही थी। उसे अपनी आर्थिक स्थिति का कोई भान नहीं था। वह तो बस तथागत के आकर्षण में ही खोयी हुई थी। तभी पीछे से किसी ने उसको झकझोरा- ''अरे माई! आगे बढो, तुम्हारा क्रम आ गया है।''

बुढ़िया पूरे उत्साह से आगे बढ़ी। लेकिन भगवान के सामने पहुँचते ही किंकर्तव्य-विमूढ़ सी खड़ी रह गयी। प्रणाम के लिए झुक भी न पायी। वह अपनी परिस्थिति समझते ही उदास हो गयी थी। उसे देर करता देख पीछे से फिर किसी ने टहोका मारा- ''अरे माई! प्रणाम करके दान दो और बगल हटो। हमें भी आगे आना है ना?''

बुढ़िया का मन अपनी दरिद्रता के कारण आत्मग्लानि से भर गया था। सोचने लगी- ''मैं निकृष्ट भिखारिन, बेकार यहाँ तक चली आयी। भगवान के किसी का काम की नहीं, उनका और दूसरे श्रद्धालुओं का समय नष्ट कर रही हूँ। अच्छा होता दूर से ही प्रणाम कर लेती।''

तभी पीछे से फिर टहोका लगा- ''आगे बढ़ो माई! अपना दान समर्पित करो।''

बूढ़ी भिखारिन का मन अपनी दुर्दशा पर चीत्कार

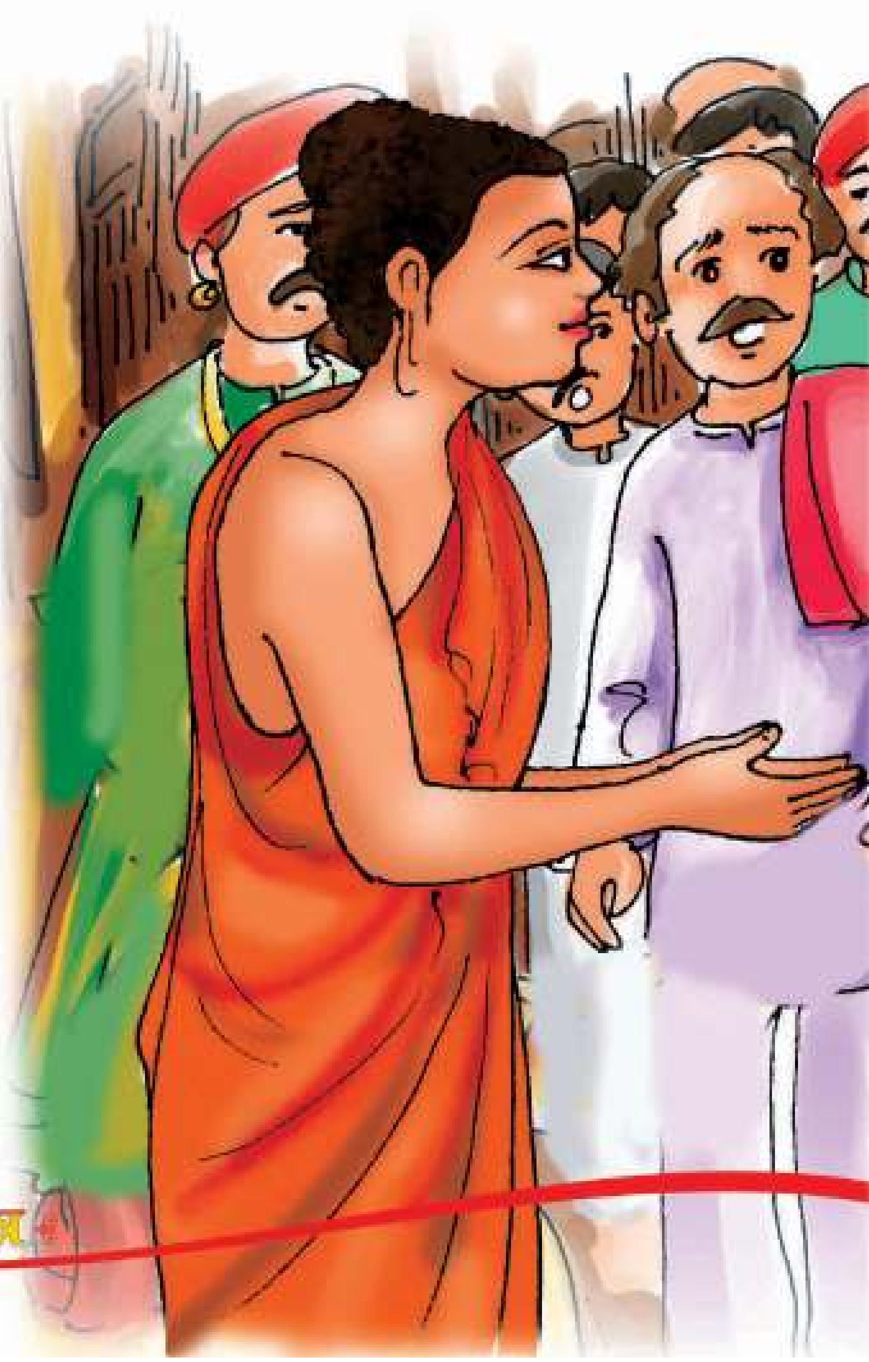

कर उठा। लेकिन अपना दुःख किससे कहती? बस, आँसुओं के साथ कष्ट भरी वाणी फूट पड़ी– ''हे तथागत! भला मैं आपको दान में क्या दे सकती हूँ? मेरे पास ये जीर्ण–शीर्ण बूढ़ा शरीर है, जो संघ की सेवा भी नहीं कर सकता। मेरे पास तन ढँकने को सिर्फ ये गंदी और फटी हुई आधी धोती है जो संघ के किसी काम नहीं आयेगी।''

वह रोने लगी थी। भगवान बुद्ध ने मुस्करा का बुढ़िया की ओर अपनी वात्सल्य भरी दृष्टि डाली, जैसे कह रहे हो कि भगवान तो सिर्फ भाव के भूखे होते हैं। बुढ़िया को लगा, जैसे तथागत की दृष्टि उसके हाथ में पकड़ी किसी वस्तु पर चुभ रही है।

अब बुढ़िया का ध्यान अपने हाथ पर गया तो उसने देखा कि वह अधखाया और जूठा आम भी उसकी अंगुलियों में मजबूती से पकड़ा हुआ था। वह उसके सुबह से भूखे पेट का एकमात्र भोजन जो था।

भिखारिन की आँखों में जैसे बिजली कौंधी। उसके हृदय में मानों आशा और ऊर्जा का असीम समुद्र हिलोरे मारने लगा। उसने वहीं से चीखकर कहा– ''भगवान! मेरे हाथ में तो सिर्फ यह अधखाया और जूठा आम ही बचा है। क्या आप इसे ही दान के रूप में स्वीकार करेंगे?''

यह सुनते ही भीड़ में शोर मच गया– अरे, ये बुढ़िया पागल हो गयी है क्या? जो भगवान को जूठा आम दान करने को पूछ रही है। बहुत पाप लगेगा इसे। नरक में जायेगी सीधे। इसे बाहर करो यहाँ से ऽऽऽ।''

कुछ लोग उसे पकड़ कर बाहर धकेलने के लिए दौड़ पड़े। लेकिन तभी एक दिव्य और सम्मोहक स्वर ने सबके मुँह पर मानो ताले जड़ दिये।

''हाँ, मुझे स्वीकार है माते! जैसे लाखों जलतरंग एक साथ बज उठे हों। सबने देखा, भगवान बुद्ध स्वयं अपने आसन से उठे और चलते हुए उस भिखारिन के पास पहुँच गए। फिर घुटनों के बल बैठकर उसका आम वाला हाथ थाम लिया– मुझे आपका दान स्वीकार है माते! लाओ मुझे समर्पित करो।''

तथागत की इस अप्रत्याशित प्रतिक्रिया को देखकर लोगों के मुँह खुले के खुले रह गए– ''अरे! तथागत ने भिखारिन का झूठा आम स्वीकार कर लिया।''

लोगों में कौतूहल के कारण शोर भी बढ़ने लगा। आश्चर्यचकित महाराज बिम्बसार और उनके दरबारी, सेठ–साहूकार भी तथागत की

इस अविश्वसनीय प्रतिक्रिया का रहस्य जानने हेतु स्वयं उठकर उस भिखारिन के पास आ गए। सबने देखा, तथागत का मुखमण्डल करुणा और वात्सल्य से भीगा हुआ था।

महाराज बिंबसार ने पूछ ही लिया– भगवान! इतने धनी–मानी नागरिकों के अलावा स्वयं मैंने भी इतने बहुमुल्य दान आपको समर्पित किये, किन्तु आपने उन्हें हाथ तक नहीं लगाया। सिर्फ दूर से ही मौन सहमति प्रदान करके स्वीकार किया। किन्तु इस भिखारिन के जूठे आम लेने के लिए आपने न सिर्फ अपनी वाणी को कष्ट दिया, बल्कि अपने आसन से उठकर यहाँ तक दौड़े चले आये। ये कैसा रहस्य है प्रभु?''

तब भगवान बुद्ध की अद्भुत शान्ति से भरी वाणी गूंजी– ''हे राजन! आप सब सामर्थ्यवान हैं, फिर भी अपने धन का एक अंशमात्र दान किया है। आप सभी के पास अभी भी जीवन यापन एवं सुख–सुविधाओं हेतु पर्याप्त धन संपत्ति शेष होगी। किन्तु इस साधनहीन वृद्धा के पास आज के भोजन के लिए भी कुछ नहीं है। इसने तो अपना मुँह का कौर यह जूठा आम भी मुझे समर्पित कर दिया। क्या इस सच्चे दान को स्वीकार करने के लिए मेरा स्वयं उठना कुछ अनुचित है?''

''कोई क्या बोलता? तथागत के शुद्ध, सात्विक और आडम्बर विहीन प्रेम के आगे सब नतमस्तक थे। उस भिखारिन के बहाने सबको मानो सच्चे दान का वास्तविक मर्म ज्ञात हो गया था।

तथागत के भिक्षुओं ने तत्काल उस वृद्धा भिखारिन को उसकी आजीवन सेवा– सुश्रुषा एवं भोजन प्रबंध हेतु संघ के संरक्षण में ले लिया। यह राजा एवं नगर सेठों की आँखें खोलने और वास्तविक कर्तव्य बोध करने वाली एक धम्मशिक्षा (बुद्ध का उपदेश) भी थी।

• ऊँचाहार (उ.प्र.)

उलझ गए!

• देवांशु वत्स

साप्ताहिक परीक्षा में पांच दोस्तों ने भाग लिया। आलोक के सुरेश से अधिक अंक थे। सुरेश को प्रकाश से अधिक अंक मिले। आलोक को निखिल से कम अंक प्राप्त हुए। कबीर को आलोक और सुरेश के बीच के अंक मिले। इन पांच बच्चों में सबसे अधिक अंक किसे मिले?

(उत्तर इसी अंक में)

(रवीन्द्रनाथ ठाकुर जयंती : ७ मई)

हृदय परिवर्तन

प्रसंग : श्यामसुंदर सुमन

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर को नोबल पुरस्कार मिलते ही उन्हें बधाई देने वालों का तांता लग गया। दूर-दूर से आकर लोगों ने उनका अभिनंदन किया। लेकिन उनका पड़ोसी उनसे मिलने नहीं आया। उसने सोचा कि इनमें ऐसी क्या खास बात है? सभी लोग इनके चरण क्यों छूते हैं। पड़ोसी के इस उपेक्षा पूर्ण व्यवहार ने रवीन्द्र बाबू को मन ही मन परेशान कर दिया। वे थोड़ा दुखी भी हुए। अगली सुबह जब वे समुद्र के किनारे टहल रहे थे तो उन्होंने देखा कि सूर्य की स्वर्णिम किरणों के पड़ने से सागर सोने सा दमक उठा। प्रकृति प्रेमी रवीन्द्र बाबू इस दृश्य को देखकर भाव विव्हल हो उठे। तभी उनकी दृष्टि पास ही के पानी से भरे गढ्डे पर पड़ी। प्रातःकालीन सूर्य कि किरणें वहाँ भी सोना बरसा रही थी। रवीन्द्र बाबू के मन में विद्युत की भांति यह विचार कौंधा कि जब सूर्य इस प्रकार समानता रखता है तो मुझमें भेदभाव क्यों? प्रश्न चरण स्पर्श का है। मेरा पड़ोसी चरण स्पर्श नहीं करता है तो मैं ही उसके चरण छू लेता हूँ। ऐसा सोचते हुए रवीन्द्र बाबू पड़ोसी के घर गए। वह टहल रहा था। रवीन्द्रबाबू ने उसके चरण छूते हुए आशीर्वाद माँगा। पड़ोसी हतप्रभ रह गया। उसकी आँखें छलक पड़ी और वह बोला- आप जैसे ऋषितुल्य व्यक्ति को नोबेल पुरस्कार मिलना सर्वथा उचित है। ऐसा कहते हुए वह उनके चरणों में गिर गया।

• भीलवाड़ा (राज.)

लटकन और ननकू की दौड़

कहानी : इंजी. आशा शर्मा

लटकन कछुआ बहुत उदास बैठा था। ननकू खरगोश के कारण आज फिर उसका मूड खराब हो गया।

''बड़े फुर्तीले बनते हो ना...अरे। एक बार तो तुम्हारे दादा ने मेरे दादा को और दूसरी बार तुम्हारे पिताजी ने मेरे पिताजी को दौड़ में हरा दिया था लेकिन अब और नहीं... अब हारने की बारी तुम्हारी है...'' ननकू सब दोस्तों के सामने उसे चुनौती देकर गया था।

''इसमें घबराने की क्या बात है...उसे मैदान में आने तो दो...जैसे हमारे पुरखों ने जुगत लगाई थी उसी तरह हम भी कोई न कोई उपाय जरूर निकाल लेंगे...'' उसके बड़े भाई मटकन ने उसे हिम्मत बंधाई।

और फिर एक दिन... ''है हिम्मत तो आओ, मुझसे मुकाबला करो।'' ननू ने उसे सबके सामने ललकारा।''

''मुझे तुमसे कोई मुकाबला नहीं करना, मैं तो तुमसे दोस्ती करना चाहता हूँ।'' लटकन ने विनम्रता से कहा।''

''बाप-दादाओं के जमाने से चली आ रही प्रतियोगिता इतनी सरलता से समाप्त नहीं हो सकती...या तो हार मान लो या फिर चुनौती के लिए तैयार हो जाओ।'' ननकू गुस्से में बोला।''

''इसे तुम्हारी चुनौती स्वीकार है...बोलो। दौड़ कब और कहाँ होगी?'' मटकन बीच में बोला।

''इस बार दौड़ नहीं होगी...उसमें तो तुम लोग छल करते हो...इस बार भार उठाने की प्रतियोगिता होगी...बोलो स्वीकार है या हार मानते हो?'' ननकू ने इस बार चुनौती बदल दी।

''हमें स्वीकार है...लेकिन हमारा भी एक प्रस्ताव है...'' मटकन ने कहा।

''बोलो''

''ये दौड़ नदी के किनारे होगी...जितनी दूरी तुम धरती पर चलोगे, उतनी दूरी लटकन नदी में तैर कर पार करेगा..''मटकन ने अपनी बात रखी।

''मुझे कोई आपत्ती नहीं।'' ननकू ने खुश होते हुए कहा क्योंकि उसे अपनी चाल पर बहुत घमंड था।

अगले रविवार को दौड़ होनी तय हुई। मिल्लू लोमड़ को निर्णायक बनाकर दौड़ शुरु होने वाले बिन्दु पर और कल्लू कौए को दौड़ समाप्त होने वाले स्थान पर तैनात करना तय किया गया। जंगल के सभी जानवरों को दौड़ देखने और उत्साहवर्धन करने के लिए आमंत्रित किया गया।

रविवार के दिन सुबह से ही नदी के किनारे इस अनोखी प्रतियोगिता को देखने वाले जानवरों की भीड़ जुट गई। दोनों निर्णायक अपनी-अपनी जगह पर कुर्सी लगाकर बैठ गए। राजा मोहरसिंह को अंतिम निर्णय देने के लिए बुलाया गया।

दो-दो किलो का भार ननकू और लटकन की पीठ पर बाँध दिया गया। ननकू की सुकोमल सी पीठ बोझ के कारण थोड़ा नीचे हो झुक आई लेकिन लटकन की कठोर पीठ पर उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ। वह ननकू की ओर देख कर मुस्कुराया और उसे अंगूठे के संकेत से ''आल द बेस्ट'' कहा...

दोनों ने दौड़ शुरु करने के लिए स्थिति ले ली। ननकू जमीन पर खड़ा था वहीं लटकन उसी के बराबर में नदी में खड़ा था। मोहरसिंह से सीटी बजाकर दौड़ आरंभ करने का संकेत किया और दोनों प्रतियोगी चल पड़े।

कुछ ही दूर चलने पर ननकू बोझ से हाँफने लगा। उसकी पूरी देह पसीने से भीग गई। उसकी चाल धीमी होने लगी वहीं लटकन बड़ी सहजता व आनंद से लक्ष्य की ओर बढ़ा चला जा रहा था। ननकू मार्ग में ही थक गया और लटकन एक बार फिर से दौड़ में विजयी आया।

''अपने दादा और पिता की भांति लटकन भी खरगोश और कछुए की दौड़ में विजेता घोषित किया जाता है। मोहरसिंह ने घोषणा कि तो लटकन और मटकन खुशी से झूम उठे।

''भैया! ये क्या चमत्कार था...मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा कि मैं ये दौड़ जीत गया हूँ। आपने इतने विश्वास के साथ कैसे ये चुनौती स्वीकार कर ली थी?'' लटकन ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

''ये विज्ञान का चमत्कार है मेरे भाई! एक बहुत बड़े वैज्ञानिक आर्कमिडिज ने अपने सिद्धांतों में बताया है कि किसी वस्तु को किसी द्रव में थोड़ा या पूरा डुबा दिया जाये तो उसके भार में कमी हो जाती है...यह कमी उस वस्तु द्वारा हटाये गए द्रव के भार के बराबर होती है...बस! हमने भी यही सिद्धांत अपनाया...और देखो! पानी में तुम्हारा बोझा बिल्कुल कम हो गया और तुम ननकू से आगे निकल गए...'' लटकन ने समझाया।

''सच भैया! ये तो सचमुच ही विज्ञान का चमत्कार है।'' लटकन की आँखें आश्चर्य से खुली की खुली रह गई।

विज्ञान तो सचमुच बहुत चमत्कारी है...मटकन! हम आज ही तुम्हें जंगल का विज्ञान शिक्षक बनाते हैं। सब के साथ-साथ मैं भी विज्ञान पढ़ना चाहता हूँ ताकि हम सब साथ उन्नति कर सकें।'' मोहरसिंह ने कहा। वह पीछे खड़ा उनकी बातें सुन रहा था।

''जी महाराज!'' मटकन ने मोहरसिंह को धन्यवाद दिया और दोनों भाई अपने घर की तरफ चल दिए।

ननकू अभी तक अपने हारने का कारण नहीं समझ पाया था।

● बीकानेर (राज.)

(अहिल्या बाई जयंती: १७ मई)

प्रिय बेटी!

पत्र : डॉ. विमला भण्डारी

प्रिय बेटी,

कल रात तुम्हारा भेजा हुआ व्हाट्सएप संदेश देखा। तुमने इन्दौर में सम्पन्न हुए महिला बाल साहित्यकार सम्मेलन कार्यक्रम के बारे में जानना चाहा था कि बाल पत्रिका देवपुत्र द्वारा आयोजित यह आयोजन कैसा रहा?

यह आयोजन सफल और सार्थक रहा। तुमने अपने संदेश में आगे पूछा है कि यह सम्मेलन केवल महिलाओं के लिए ही क्यों था? बाल साहित्य तो पुरुष भी लिखते हैं, तुमने अपने संदेश में कई पुरुष रचनाकारों के नाम भी उदाहरण के तौर पर लिख भेजे थे। तुम्हारे पूछे गए प्रश्न की गंभीरता को देखते हुए मैंने तुम्हे व्हाट्सएप पर या फोन पर इसका उत्तर देना उचित नहीं समझा। इसके लिए मैंने तुम्हें पत्र लिखना ही उचित जाना। तुम्हें यह पत्र लिखकर बता रही हूँ कि लेखन, लेखन होता है फिर यह लिंग आधारित सम्मेलन करवा कर विभेद क्यों कर हुआ?

आओ इस प्रश्न का उत्तर दूँ इससे पहले तुम्हें इन्दौर के इतिहास की ओर ले चलती हूँ। स्त्री पुरुष समान अधिकार और स्त्री स्वतंत्रता के इस दौर में तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि भारत के लिए यह कोई नई बात नहीं है। इन्दौर की शासक एक महिला थी। उनकी अपनी एक महिलाओं की सेना थी। जिसके दम पर उन्होंने बिना युद्ध किए ही विजय प्राप्त कर ली थी और दुश्मन को परास्त कर दिया था। यह प्रतापी शासक और कोई नहीं इन्दौर की शासक अहिल्याबाई होलकर थी।

अहिल्या बाई होलकर हमेशा नारी जगत के लिए प्रेरणा स्रोत रही हैं। उन्होंने न सिर्फ पति और ससुर के देहांत के बाद अपने राज्य की गद्दी संभाली बल्कि एक ऐसे शासक का उदाहरण प्रस्तुत किया जो हर दौर के लिए एक आदर्श बन सकता है। उन्होंने अपने शासनकाल में हमेशा लाभ हानि को दरकिनार करते हुए समाज और अपनी प्रजा की आवश्यकताओं को समझा यही कारण है कि वह नई उम्मीद बन कर उभरी और लोगों ने उन्हें देवी माना। जिस तरह हमारे राजस्थान में महाराणा प्रताप को जनता सम्मान से प्रातः स्मरणीय कहकर नमन करती है उसी तरह यहां इन्दौर की जनता भी अहिल्याबाई के नाम के साथ प्रातः स्मरणीय लगाकर उनके प्रति अपना सम्मान प्रकट करती है।

यह एक साधारण स्त्री की असाधारण सच्ची कहानी है। आओ तुम्हें साधारण परिवार में जन्मी अहिल्याबाई के कुशल शासन और बुद्धि चातुर्य की वह अद्‌भुत घटना बताती हूँ।

पति खांडेराव, ससुर मल्हार राव और फिर पुत्र मालेराव की मृत्यु के बाद होलकर परिवार के पास कोई पुरुष राज्य करने हेतु नहीं था।

'कहीं राज्य का पतन ना हो जाए' यह सोचकर अहिल्याबाई राजकाज के काम में लग गई। उसी के एक कर्मचारी ने दूसरी रियासत के राघोबा को पत्र लिखकर होलकर पर कब्जा करने का न्योता दे डाला। अहिल्या को इसका पता चल गया और उन्होंने घोषणा की कि अब वह खुद राजगद्दी पर बैठेगी। उनके सेनापति तुकोजी राव ने

उनका पूरा साथ दिया। आसपास के राज्यों में इस बात की सूचना दी गई। पेशवा बाजीराव को भी इस बात की जानकारी दी गई। सभी अहिल्या के इस कदम से खुश थे और उन्होंने उनकी सहायता करने का आश्वासन दिया। सभी का साथ पाकर अहिल्या ने राज्य की मजबूती के लिए रसद और अस्त्र-शस्त्र इकट्ठे करने शुरु कर दिए। साथ ही उन्होंने अपने नेतृत्व में एक महिला सेना बनाई। इन महिलाओं को सभी प्रकार के प्रशिक्षण दिए गए। युद्ध कौशल भी सिखाए गए। अपनी पूरी तैयार के बाद उन्होंने अपने राज्य पर बुरी नजर रखने वाले राघोबा को पत्र लिखकर चेतावनी दी कि हम तुम्हारी सेना पर वार करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने लिखा-

''हे राजन! तुमने मुझे एक अबला समझने की भूल की है इसलिए मैं तुम्हें युद्ध भूमि पर बताऊंगी कि अबला क्या कर सकती है? मेरे अधीन मेरी महिला सेना तुम्हारा सामना करेगी। युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। लेकिन याद रखना अगर हमारी इस युद्ध में हार होती भी है तो दुनिया हमें कुछ नहीं कहेगी पर यदि इस युद्ध में तुम हारे तो इस कलंक को अपने माथे से कभी नहीं हटा पाओगे कि तुमने महिलाओं से युद्ध किया। इसलिए अच्छा होगा कि इस लड़ाई से पहले एक बार दोबारा विचार कर लो। अन्यथा परिणाम के तुम स्वयं जिम्मेदार होंगे।'' अहिल्या का संदेश पढ़कर रघुनाथ राव परेशान हो गया। उसका मुँह खुला का खुला रहा गया और जब वह बोला तो उसके मुँह से यही निकला- ''बाप रे बाप! क्या यह एक अबला के स्वर हैं?''

उसने मन बना लिया था कि वह युद्ध नहीं करेगा। लेकिन उसके पास मौजूद कुछ अधिकारी नहीं मान रहे थे। वह रघुनाथ राव को भड़का रहे थे। वह कह रहे थे-

''महाराज! अहिल्या आपके सामने कहीं भी नहीं टिकेगी। आखिर वह है तो महिला ही।'' पर रघुनाथराव नहीं माने उन्हें आभास हो चुका था कि उन्हें लेने के देने पड़ सकते हैं। वह जानते थे कि अहिल्या कमजोर नहीं है उनके पास तुकोजीराव जैसा कुशल सेनापति भी है।

(चित्र : देवपुत्र का महिला बाल साहित्यकार सम्मेलन जिसका उल्लेख इस पत्र में है।)

जिसने होलकर के लिए कई युद्ध जीते हैं। आखिरकार उसने अहिल्या को पत्र लिखकर युद्ध से अपने कदम पीछे हटा लिए। इस तरह रघुनाथ राव बाजी हार चुका था और उनके राज्य पर आया हुआ संकट दूर हो चुका था।

अहिल्या बाई की यह प्रेरक जीवनी निसंदेह तुम्हारे भीतर भी एक नया जोश, एक नई उमंग और साहस का संचार करने वाली साबित हुई होगी। तुम्हें अपने भीतर एक नई स्फूर्ति, एक नई चेतना अनुभव हो रही होगी।

ठीक यही घटना सम्मेलन के इन दो दिनों में घटित हुई। जब अलग से महिला लेखन का विश्लेषण और अवलोकन किया गया। नए रहस्य उद्घाटित हुए। साथ ही संभावित स्थितियों के रेखांकन से तैयार हुआ एक नया परिवेश।

मातृशक्ति को प्रेरणा देने वाला, प्रकृति प्रदत्त उनकी नैसर्गिक सृजन क्षमताओं को इंगित करता यह दो दिन का सम्मेलन कई मायनों में अनूठा साबित हुआ। आपसी मेलजोल का भी अपना एक अस्तित्व है।

नए संकल्पों के साथ बच्चों के सर्वांगीण, चहुँमुखी व्यक्तित्व विकास के लिए उत्तम बाल साहित्य रचने की ऊर्जा लेकर लौटी हूँ। यह जानकर तुम्हें प्रसन्नता होगी। ''महिला बाल साहित्यकार सम्मेलन '' का उद्देश्य भी समझ आ गया होगा।

तुम्हारी माँ
डॉ. विमला भंडारी,
सलूम्बर (राज.)

उल्टा-पुल्टा

कविता : गौरव गुप्ता

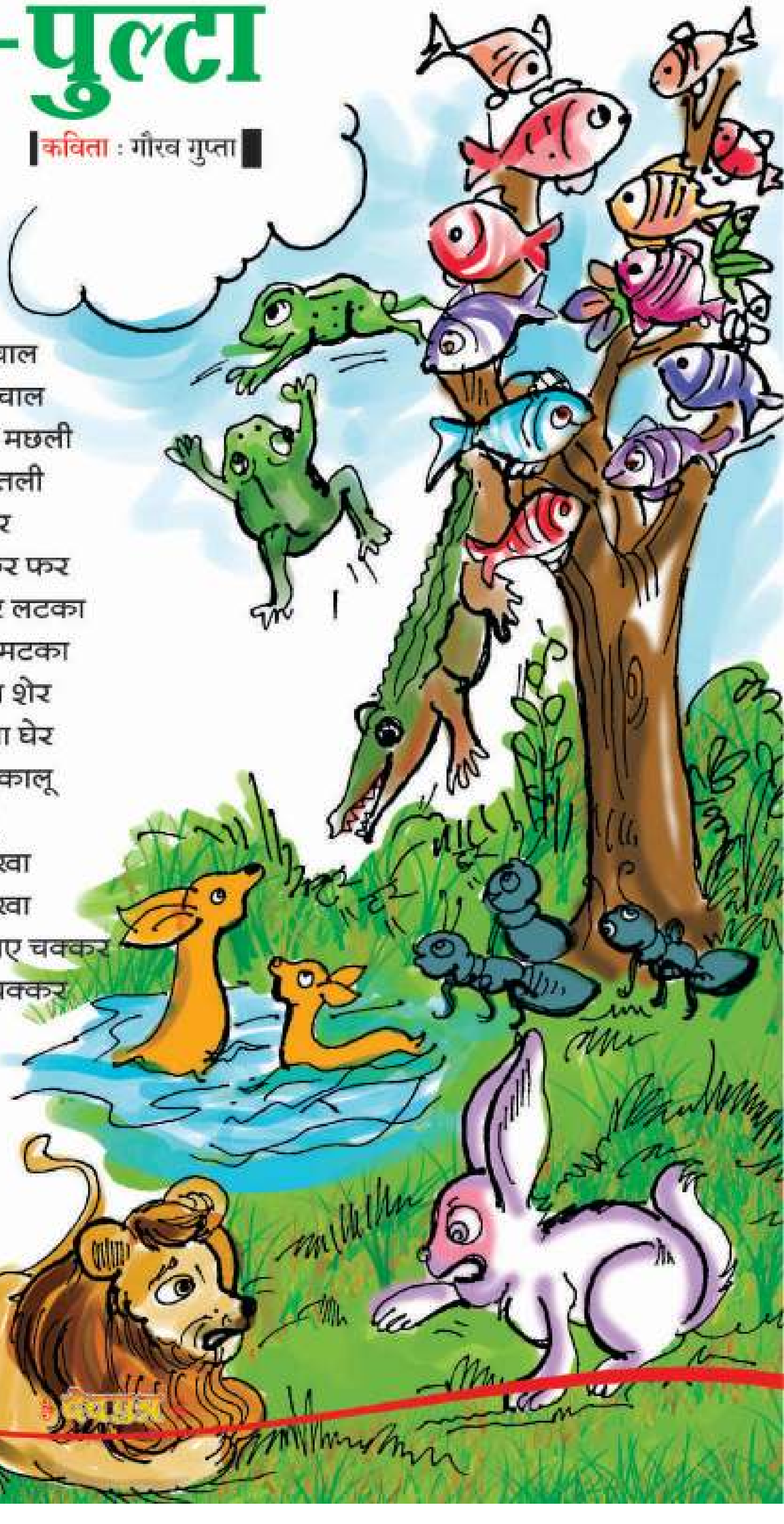

हाथी चला गधे सी चाल
गधा चले हाथी की चाल
ऊँचे पेड़ पर लटकी मछली
मोटी मोटी पतली पतली
चींटी बोले टर टर टर
मेंढ़क उड़ता फर फर फर
मगरमच्छ है पेड़ पर लटका
हिरण तैरता लेकर मटका
डर के मारे छुप गया शेर
खरगोश ने लिया था घेर
ऊपर पेड़ पर बंदर कालू
नीचे बैठा भूरा भालू
कालू ने भालू को देखा
भालू ने कालू को देखा
देख के दोनों खा गए चक्कर
ये जंगल है या घनचक्कर

● कटनी (म.प्र.)

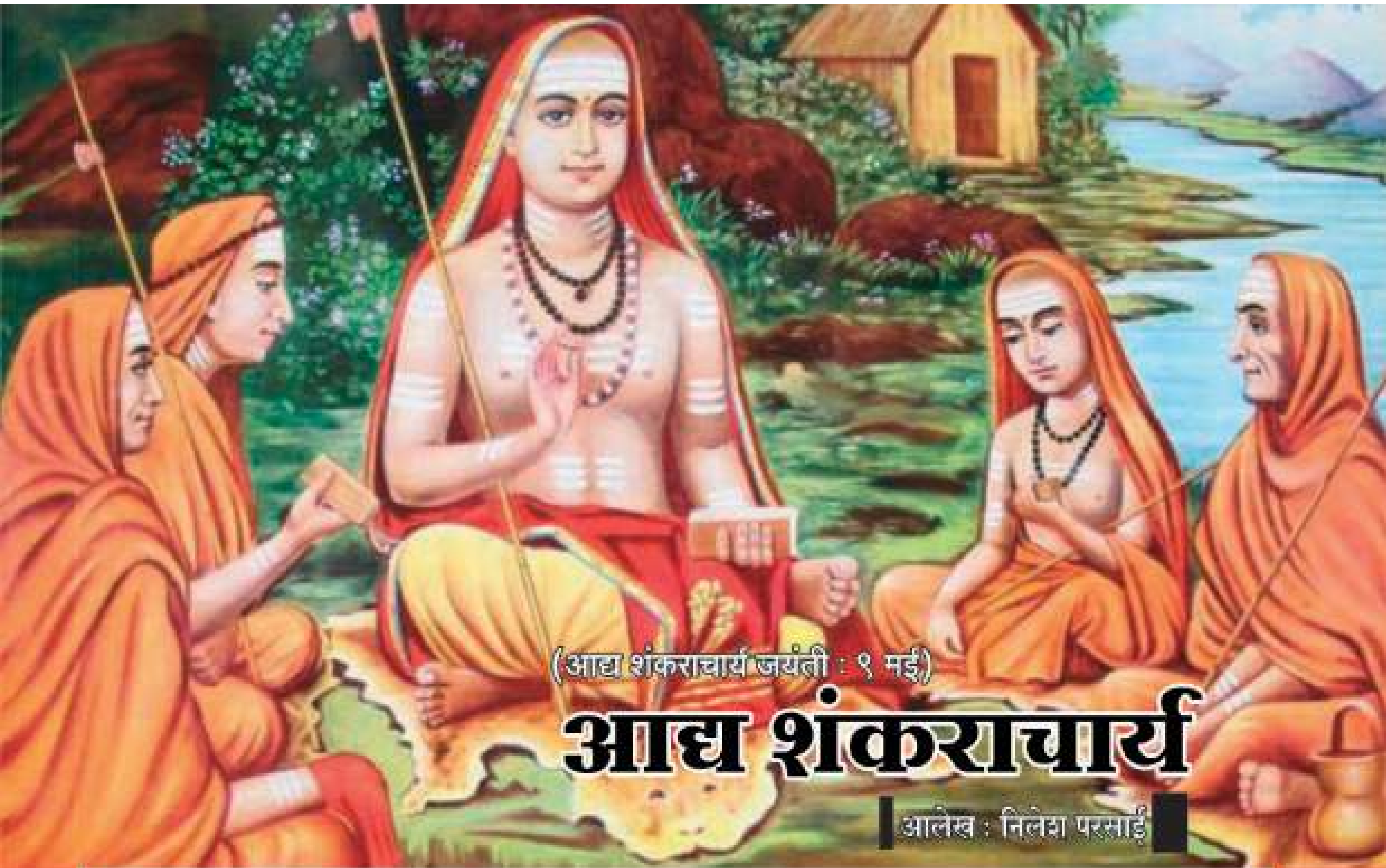

(आद्य शंकराचार्य जयंती : ९ मई)

आद्य शंकराचार्य

आलेख : निलेश परसाई

बहुत वर्ष पहले की बात है। केरल के कालड़ी नामक ग्राम में श्रीशिवगुरु के यहाँ आर्यम्बा ने वैशाख शुक्ल ५ को एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम रखा गया शंकर। बालक शंकर के चेहरे पर बड़ा ही ओज था। जब यह बालक बड़ा हुआ तो जो बात एक बार सुन लेता उसे वह याद हो जाती। पिता ने ४-५ वर्ष की उम्र में उसका उपनयन संस्कार कर उसे गुरुकुल भेज दिया। स्मरण शक्ति तेज होने के कारण बालक ने जल्दी ही वेद व उनके छः अंग रट लिए। अब वह अपने गुरु गोविन्दाचार्य आश्रम में रहकर विभिन्न धर्म ग्रंथों का अध्ययन करने लगा। एक बार की घटना है शंकर के गुरु गोविन्दाचार्य नर्मदा के तट पर स्थित गुफा में समाधि लगाए बैठे थे। तभी नर्मदा की उफनती धारा तीव्र गति से आगे बढ़ने लगी। सभी शिष्य घबराने लगे की कहीं गुरुजी डूब न जाए। तब शंकर ने उन्हें धैर्य बंधाया और गुफा के द्वार पर एक घड़ा रखकर उनसे कहा कि चिंता की कोई बात नहीं गुरुजी को कुछ नहीं होगा। नर्मदा की वह धारा तेजी से आगे बढ़ रही थी परन्तु गुफा के द्वार पर रखे घड़े में समाकर शांत हो गई। सब पानी घड़े में भर गया एक बूँद पानी भी बाहर न रहा सब शिष्य यह देखकर आश्चर्य चकित रह गए।

एक बार शंकराचार्य भिक्षा माँगने गए। एक घर के द्वार पर जाकर आवाज लगाई-''भिक्षां देहि'' तभी एक वृद्धा बाहर आई वह बहुत गरीब थी। उसने कहा- ''मेरे पास एक सूखे आँवले के सिवा कुछ भी नहीं है यही ले लो।'' शंकराचार्य ने वह आँवला उससे लेकर कहा- ''माता, समझो आज से आपके सारे दुःख दूर।'' यह कहकर शंकराचार्य वहाँ से चले गए। बुढ़िया जब अपनी कुटिया के अंदर आई तो उसने देखा उसके घर में हजारों सोने के आँवले बिखरे पड़े हैं। वह समझ गई कि ये उस बालक का ही चमत्कार है। यही बालक शंकर बड़ा होकर शंकराचार्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अनेक विद्वानों से इन्होंने शास्त्रार्थ किया और विजयी हुए। और चार धाम (मठ) स्थापित किए। उनके अपने जीवन में अनेक चमत्कारी घटनाएँ हुईं। वे साक्षात् भगवान के अवतार थे। उन्होंने ज्ञान का प्रसार किया और अज्ञान को दूर किया। वे केवल ३२ वर्ष जीवित रहे पर इन ३२ वर्षों में उन्होंने जैसे कई जन्मों का कार्य कर दिया। इसलिए इन्हें आद्य शंकराचार्य, आदिगुरु, जगद्गुरु आदि अनेक उपाधियाँ दी गई हैं।

• **खरगोन (म.प्र.)**

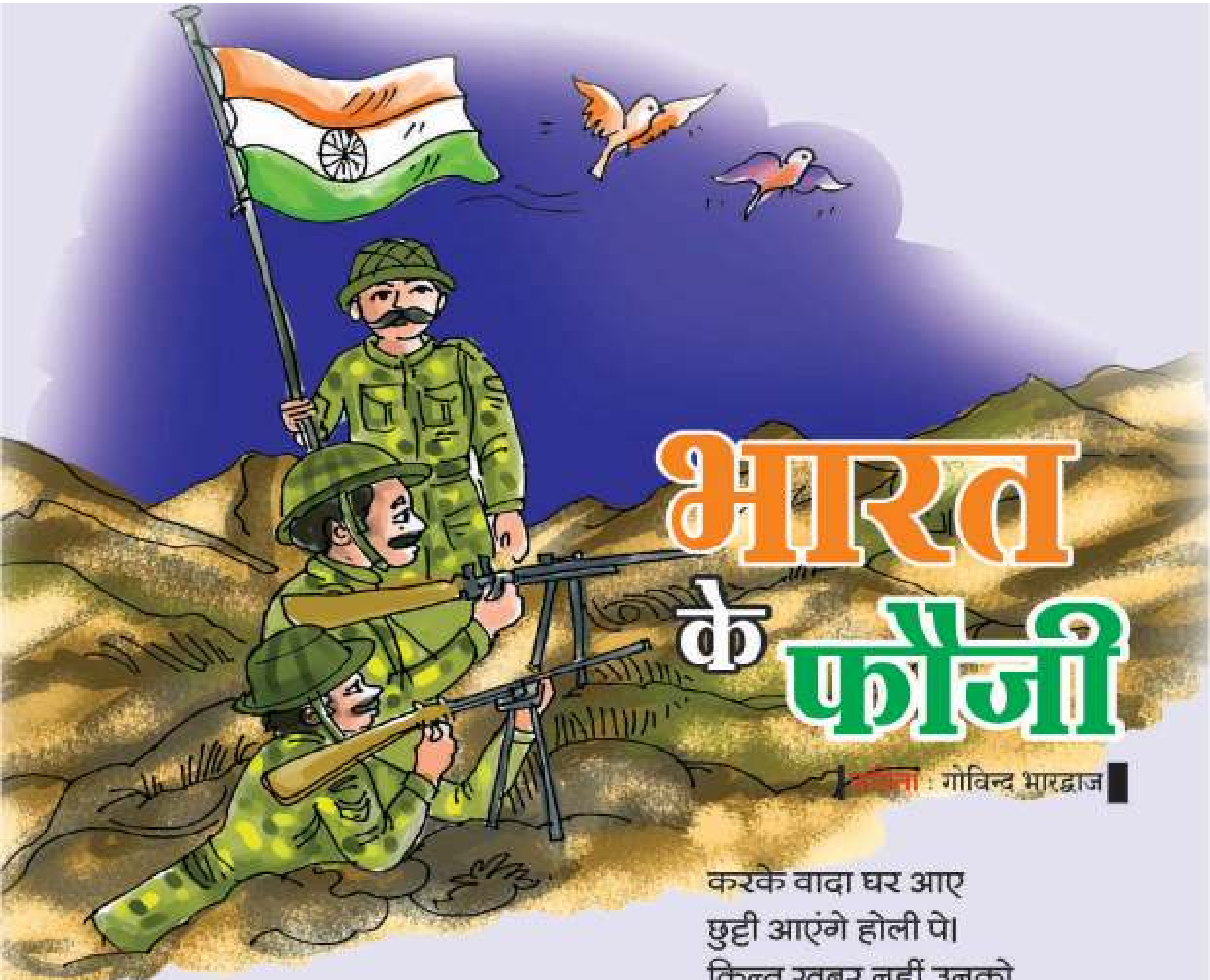

भारत के फौजी

कविता : गोविन्द भारद्वाज

करके वादा घर आए
छुट्टी आएंगे होली पे।
किन्तु खबर नहीं उनको
नाम लिख गया गोली पे।

लुटा के जान अपनी वे
देश पे बलिदान हो गये।
मेरे भारत के फौजी
इक नई पहचान हो गये।

काश्मीर की सरहद पर
खड़े रहे वो सीना ताने।
बर्फ की ठंडी हवा में
गाते रहे नये तराने।

हम भी बड़े हो एक दिन
भर्ती होंगे निज फौज में
कर सुरक्षा सीमाओं की
देश को रखेंगे मौज में।

भूल न जाना वीरों को
कसम आज ये उठानी है।
स्वर्ण अक्षरों में लिखनी
उनकी हमको कहानी है।

● अजमेर (राज.)

राम का उपहार

चित्रकथा : देवांशु वत्स

समझदार लड्डू

कहानी : डॉ. चेतना उपाध्याय

''वाह! लड्डू जीत गया।'' ''नहीं नहीं मैं नहीं अतुल भैया जीते हैं।'' अतुल भी जोर–जोर से उछलने लगा खुशी के मारे अक्सर ही वह फुटबाल के जैसे उछलने लगता है फिर उसे खिलखिलाते देख लड्डू भी दोनों हाथों से ताली पीटते–पीटते उछलने लगा। उन दोनों को उछलते देख फिरकी भी उछलने लगी, पर अभी भी वो लगातार ताली पीटते हुए बोले जा रही थी, ''लड्डू जीत गया, लड्डू जीत गया।'' अतुल अपनी धुन में ''मैं जीत गया, मैं जीत गया'' चिल्लाते चिल्लाते उछल रहा था।

''हट झूठे तू थोड़े ही जीता है।'' अपनी बाल सुलभ मुस्कान के साथ फिरकी बोली, लड्डू ने झट से उसके मुँह को अपनी हथेलियों से ढँक उसे चुप कराते हुए कहा ''तू चुप कर ज्यादा बक–बक मत कर। अतुल भैया हमेशा जीतते हैं, है न भैया?'' रौब से सीना फुलाते हुए अतुल बोला ''हाँ ऽऽऽऽआ।''

जिससे फिरकी चिढ़ गई, ''ऊंह'' कर उसने मुँह फेर लिया। शोर सुनकर दादी माँ भी बाहर आ गई, उन्होंने भी अतुल को अपने अंक में जकड़ कर कहा ''अरे वाह, मेरा लाडेसर जीत गया।'' फिरकी पुनः शिकायती अंदाज में बोली ''दादी माँ, लड्डू जीता है।''

''चल हट,'' दादी माँ, ने ''बड़ी आई वकीलनी'' कह कर उसे दूर धकेल दिया और आदेशात्मक स्वर में बोली ''ज्यादा वकालात झाड़ने की कोशिश मत कर। यहाँ से नौ दो ग्यारह हो जा। ज्यादा पंचायत करेगी तो घर में घुसने नहीं दूंगी।'' फिरकी बेचारी कसमसा कर रह गई।

अतुल भैया दादी माँ के साथ अंदर चले गए। फिरकी और लड्डू भी बरामदे से बाहर के दरवाजे की ओर चल दिए।

लड्डू अपनी मस्ती में चला जा रहा था। मानों कुछ हुआ ही नहीं और फिरकी को अतुल, लड्डू और दादी माँ पर गुस्सा आ रहा था। वह दादी माँ से सबसे ज्यादा गुस्सा थी। फिर लड्डू पर उसके बाद अतुल पर मगर बेचारी मुँह फुलाए चलने के अलावा कुछ और न कर पाई।

''आह...कितनी सुन्दर तितली'', लड्डू गुलाब के फूल पर बैठी तितली की ओर देखते हुए बोला।

''मुझे नहीं देखना...'' फिरकी मुँह फुलाए बोली। जबकि वह सारा दिन तितलियों के पीछे दौड़ती रहती है।

''अरे पागल देख ले कितने पास बैठी है तेरे।''

''मुझे नहीं देखना, और पागल किसे बोला? पागल तो तू है जीते भी हार मान लेता है और हँसता रहता है और वह दादी माँ...ऐसी होती है दादी?'' फिरकी को गुलाब पर बैठी तितली के बजाय थोड़ी देर पहले हुई घटना दिखाई दे रही थी। लड्डू पर तो उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ था।

''मैं और पागल? जा जा अब मैं आठ साल का हो गया हूँ, तेरे से अधिक बुद्धिमान भी, तेरे में तो कोई बुद्धि नहीं है। लड्डू गुलाब के गमले के पास वाली तिपाई पर बैठते हुए बोला।

''आ बैठ, तुझे भी समझाता हूँ। मेरी माँ इस बंगले में झाड़ू-पोछा, बर्तन कपड़े धोने का काम करती है। मैं तो वैसे ही माँ के साथ आ जाता हूँ। अतुल भैया के पास ढेर सारे सुन्दर सुन्दर खिलौने हैं। उनके पिताजी आए दिन नए नए ढेर सारे सुन्दर-सुन्दर खिलौने लाते रहते हैं। अतुल भैया कितने अच्छे हैं। मुझे भी साथ खेलना बहुत अच्छा लगता है। मेरे पास तो एक भी खिलौना नहीं है। इसलिए मैं यही खेलता हूँ। पर जब भी अतुल भैया खेल में हार जाते हैं तो उनको बहुत बुरा लगता है। तो उसी समय खेल छोड़कर सारे खिलौने समेट कर अंदर कमरे में चले जाते हैं उदास हो कर।

तब मैं अकेला बरामदे में बैठा रह जाता हूँ। माँ सारा काम समाप्त करके आए, तब तक मुझे यहाँ अकेला बैठना पड़ता है।

इससे तो अच्छा है ना? भैया कभी भी हारे नहीं और हमारा खेल चलता रहे। इसलिए मैं हार जाता हूँ। भैया खुश हो जाते हैं और खेल दोबारा शुरु हो जाता है और मुझे माँ के काम समाप्त करने की प्रतीक्षा भी नहीं करना पड़ती। घर के काम समाप्त होने के बाद भैया की माँ कभी-कभी कुछ खाने को भी दे देती है। बोलती है 'ले रे लड्डू तू भी लड्डू ले ले रे। प्रसाद है दोनों हाथ एक साथ मिला के आगे कर। देख प्रसाद है नीचे एक भी दाना गिरना नहीं चाहिए।'

पता है, वो सबको लड्डू का टुकड़ा प्रसाद बोल कर देती है। पर मुझे हँसते हँसते लड्डू बोलती है तो मुझे भी बहुत अच्छा लगता है। खाने में भी वह बहुत अच्छा स्वाद का होता है। यहाँ तो मेरे मजे ही मजे हैं। तू नहीं समझेगी। पर मैं तो बहुत समझदार हूँ।''

● अजमेर (राज.)

डॉ. विकास दवे सम्मानित

कानपुर। बाल साहित्य संवर्धन संस्थान कानपुर के सान्निध्य में प्रबुद्ध साहित्यकारों एवं कानपुर नगर के सम्माननीय श्रोताओं की उपस्थिति में बहुप्रतीक्षित सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। डॉ. राष्ट्रबंधु जी की प्रेरणा से उनके परिजनों और इष्टमित्रों द्वारा विगत ३ वर्षों से इस सारस्वत सम्मान समारोह का आयोजन किया जाता है।

देवपुत्र बाल मासिक पत्रिका के प्रबंध सम्पादक डॉ. विकास दवे को डॉ. नरेश सक्सेना 'सैनिक' स्मृति सम्मान २०१९ प्रदान किया गया। ज्ञातव्य है कि यह सम्मान ख्यातिलब्ध साहित्य विदुषी डॉ. मिथिलेश दीक्षित द्वारा स्थापित किया गया है। शाल, श्रीफल, अभिनन्दन पत्र, प्रतीक चिन्ह एवं सम्मान राशि प्रदान कर श्री दवे को उपस्थित अतिथियों ने सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रख्यात बाल साहित्यकार डॉ. उषा यादव (आगरा), श्री रामेश्वर प्रसाद सारस्वत (सहारनपुर), डॉ. नागेश पांडेय (शाहजहाँपुर), नीलम राकेश (लखनऊ), चक्रधर शुक्ल (कानपुर) गौरीशंकर वैश्य (लखनऊ), डॉ. सुधा गुप्ता (कटनी), श्री रामगोपाल राही (बूँदी), इंजी. आशा शर्मा (बीकानेर), रमेश मिश्र (कानपुर), सुरेन्द्र गुप्ता (सीकर) की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही।

अपने सम्मान के प्रत्युत्तर में श्री दवे ने कहा– ''मैं साहित्य का एक सामान्य विद्यार्थी हूँ इसलिए इस तरह के सम्मान के योग्य नहीं। यह सम्मान देवपुत्र संस्थान द्वारा किये जा रहे बाल साहित्य उन्नयन के कार्यों को दिया गया सम्मान है। उन्होंने आह्वान किया कि सभी बाल साहित्यकार देवपुत्र पत्रिका और शोध कार्यों को अपना स्नेह आशीष दें ताकि यह कार्य और अधिक यशस्वी हो सके।''

संस्कृति प्रश्नमाला

- अयोध्या के महाराज दशरथ किस वंश के थे?
- महाभारत के पात्रों में दानवीर किसे कहा जाता है?
- कुछ वर्षों पहले रूस में आयुर्वेद का कौन सा प्राचीन ग्रंथ प्राप्त हुआ था?
- सत्तर साल पहले तक भारत का भूभाग रहे बांग्लादेश में देवी के कितने शक्तिपीठ हैं?
- अठारह पुराणों में से किस पुराण की रचना सबसे पहले हुई?
- महाराज शिवाजी ने चौदह वर्ष की आयु में स्वराज्य स्थापित करने की प्रतिज्ञा किस शिव मंदिर में की थी?
- 'हिन्दू रसायन विज्ञान का इतिहास' दो खण्डों में किस आधुनिक रसायन विज्ञानी ने लिखा है?
- प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के छक्के छुड़ा देने वाली रानी अवन्ती बाई लोधी किस रियासत की रानी थीं?
- महाराणा प्रताप का राजतिलक किस स्थान पर हुआ था?
- किस पावन सरिता पर बने एक पुष्कर घाट पर पादरियों ने कब्जा कर लिया है?

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

छोटा बड़ा

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के बचपन के प्रसंग से प्रेरित बच्चों ने सोचा वे भी लिखेंगे फूलों के रंगभरे रस में कलम डुबोकर फूलों पर कविता पर...

उपवन में थे खिल रहे कितने सारे फूल।
कौन फूल किससे बड़ा ढूँढ़ो करो न भूल।।

(उत्तर इसी अंक में।)

फलों का राजा

कहानी : राजकुमार जैन

आम नाम से भले ही आम हो, मगर इसकी गिनती दुनिया के खास फलों में की जाती है। अपने तृप्तिदायक और स्वादिष्ट स्वरूप के कारण इसे फलों का राजा कहा जाता है। दुनिया की कुल पैदावार का लगभग ८० प्रतिशत आम हमारे देश में पैदा होता है। हमारे देश में वर्तमान में एक हजार से अधिक किस्मों के आमों की पैदावार होती है। भारत में आठ से दस हैक्टर भूमि पर सालाना ८० लाख टन से अधिक आम की उपज होती है। भारत में हर साल आम विदेशों में निर्यात किया जाता है, जिससे हमें अच्छी मात्रा में विदेशी मुद्रा अर्जित होती है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति में आम का बड़ा महत्व था। संस्कृत के आदि काव्य वाल्मीकि रामायण और महाभारत तक में आमों का जिक्र आया है। पुराणों के अनुसार आम विष्णु का प्रिय फल था। बौद्धकालीन ग्रंथों में महात्मा बुद्ध को आमों के गुच्छे भेंट करने का वर्णन मिलता है। १६वीं शताब्दी में पुर्तगालियों के भारत आने से आम का परिचय पश्चिमी जगत से हुआ। गोवा से आम ले जाकर पुर्तगालियों ने दक्षिण अफ्रीका में लगाया। मिस्त्र ने भी १८२५ में भारत से आम की पौध मंगाई थी। मुगल बादशाह अकबर भी आम का खास शौकीन था। इस तरह आम आदि काल से हमारी जीवन शैली और संस्कृति का एक अभिन्न अंग रहा है।

हमारे देश में आमतौर पर अप्रैल से आमों की उपज शुरु हो जाती है, जो अगस्त तक जारी रहती है। वैसे तो आम की एक हजार से भी अधिक किस्में हैं, मगर इसकी दशहरी, लंगड़ा, मलिका, तोतापुरी, नीलम, हापुस, फजली समर, बहिश्त, चौंसा, अल्फांजों आदि किस्में ही ज्यादा लोकप्रिय हैं। इलाहाबाद के दसहरी आम सारे संसार में प्रसिद्ध हैं। आम की हर किस्म अपने कुछ अलग गुण व प्रकृति के कारण दूसरी किस्मों से विशिष्ट होती हैं।

अच्छी किस्म का पका हुआ आम एक संपूर्ण संतुलित आहार माना जाता है। आयुर्वेद के अनुसार आम स्निग्ध, पौष्टिक, बलवर्द्धक, भारी तथा अग्निवर्द्धक गुण–धर्म वाला फल है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के विशेषज्ञ आम को अन्य फलों के मुकाबले अधिक पौष्टिक व गुणकारी मानते हैं। पके हुए आम के रासायनिक विश्लेषण से हमें ज्ञात होता है कि इसमें निम्नांकित तत्व उपलब्ध हैं –

नमी : ८६.१ प्रतिशत
प्रोटीन : ६.६ प्रतिशत
कार्बोहाइड्रेट ११.८ प्रतिशत
रेशा : १.१ प्रतिशत
चिकनाई : ०.१० प्रतिशत
खनिज लवण :०.०३ प्रतिशत
चूना : ०.०१ प्रतिशत

इसे पचाने के वास्ते जीवन शक्ति का अपव्यय नहीं पड़ता है, यह स्वयं सहजता से पच जाता है।

प्रख्यात अमेरिकी चिकित्सक डॉ. विल्सन के अनुसार आम में मक्खन की तुलना में सौ गुना अधिक पोषक तत्व होते हैं, जो रक्त को शुद्ध करने और नए रक्त के निर्माण में सहायक होते हैं। तपेदिक के मरीजों के वास्ते तो आम अमृतफल है। आम के सेवन से नसों और नाड़ियों को शक्ति प्राप्त होती है।

आम के विविध पोषक तत्व उसे एक गुणकारी फल बनाते हैं। अनुसंधानों से पता चला है कि आम के उपयोग से शरीर का स्नायु संस्थान शक्तिशाली बनता है, जो रक्त निर्माण के साथ धातु विकारों को भी दूर करता है। आम का मृदु रेचक गुण उसे कब्ज के रोगियों के वास्ते उपयोगी पथ्य बनाता है। आमाशय की बीमारियों में आम का प्रयोग लाभकारी है। संग्रहणी, श्वास, अरुचि, अमल–पित्त, यकृत–वृद्धि आदि रोगों में आम का सेवन अतिशय लाभ पहुँचाता है।

गर्मी में लू लग जाने पर कच्चे आमों को पानी में उबालकर उसकी गुठली निकालकर उस पानी को रोगी को थोड़ा–थोड़ा पिलाना लाभदायक रहता है। रक्ताल्पता और दुबलेपन को दूर करने के लिए दूध के साथ आम का रस लें। यह कब्ज भी दूर करेगा। कब्ज की शिकायत वालों को अधिक रेशेदार आमों का सेवन करना चाहिए।

खाद्य पदार्थ के रूप में भी आम का अपना महत्व है। इसमें विटामिनों की प्रचुरता के साथ प्रोटीन, कार्बोज तथा वसा भी पर्याप्त मात्रा में मिलती है। इस तरह आम को गर्मी का कवच कहा जाता है। आम का रस निकालकर उसे चावल के साथ खाया जाता है। कच्चे आम के उपयोग से स्कर्वी नामक रोग दूर होता है। मधुमेह रोग में समान मात्रा में आम जामुन के फलों का रस मिलाकर लगातार कुछ दिनों तक सेवन करने से फायदा होता है। इसके नियमित सेवन से त्वचा के वर्ण में भी निखार आता है।

आम की तरह इसकी गुठली भी उपयोगी है। संभवतः इसी वजह से आम के आम गुठलियों के दाम कहावत का चलन हुआ। गुठलियों के भीतर से प्राप्त गिरी को सुखाकर अनेक तरीकों से खाने में प्रयोग लाया जाता है। गिरी में चर्बी और कार्बोहाइड्रेट अच्छी मात्रा में उपलब्ध होता है, इसलिए यह पौष्टिक भी होता हे। गिरी की सब्जी काफी स्वादिष्ट होती है। इससे आटा बनाकर इसकी रोटियाँ भी बनाई जाती हैं। गठिया रोग में आम की गिरी के तेल की मालिश करने से लाभ होता है। गुठली के चूर्ण को छाछ (मट्ठे) के साथ फांकने से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते है। यदि आपको नकसीर (नाक से खून बहना) की शिकायत है तो आम की गुठली का रस नाक में टपकाना फायदा करेगा।

आम के बहुत से लाभ हैं। मगर यह फल से अधिक औषधि है।

सड़े गले और अधिक पके आम न खाएं। इन्हें खाने से लाभ के स्थान पर हानि हो सकती है।

• भवानीमंडी (राज.)

<u>*सही उत्तर*</u>

संस्कृति प्रश्नमाला *– सूर्यवंश, कर्ण, अष्टांग आयुर्वेद, चार, ब्रह्मपुराण, रोहिडेश्वर महादेव, डॉ. प्रफुल्ल चन्द्र राय, रामगढ़ (उ.प्र.), गोगुन्दा (महादेव बावड़ी), गोदावरी*

पेंसिल बाक्स

कहानी : यशी

शिवानी मन ही मन सोच रही थी, कि जल्दी से अपना गृहकार्य करके अपनी प्रिय सखी स्वाति के जन्मदिन उत्सव में जायेंगे और वहाँ पर बाकी सभी मित्रों के साथ आनंद करेंगे। शिवानी की कक्षा में भोलू भी पढ़ता था। वह बहुत सीधा था। चुपचाप ही रहता था। उसे किसी से बात करना भी ज्यादा पसंद न था। अबकी तो भोलू को भी अपने साथ खेलने देगी। वह तो बहुत सीधा है। शिवानी मन ही मन अन्य मित्रों के साथ खेलने की योजनाएं बना रही थी। अचानक उसकी दृष्टि बस्ते पर गई और वह मन ही मन बुदबुदाई। ओऽहो मैं भी किस संसार में खो गई। पहले गृहकार्य तो करें। बाकी बातें बाद में सोचेंगे। शिवानी ने बस्ता खोला, और अपनी गृहकार्य की दैनंदिनी निकाली। शिवानी ने सबसे पहले गणित की कॉपी निकाली, फिर पेंसिल निकालने के लिए जैसे ही उसने बस्ते में हाथ डाला पेंसिल बाक्स उसमें था ही नहीं। वह बहुत परेशान सी हो गई। उसने पूरा बस्ता उलट कर देख लिया। परंतु वहाँ पर पेंसिल बाक्स नहीं मिला। अब तो शिवानी बड़ी परेशान उसने पूरा कमरा ढूँढ लिया। परन्तु वहाँ भी कहीं नहीं था। शिवानी को अपना पेंसिल बाक्स बहुत ही प्रिय था। वह बाक्स उसकी माँ ने उसे उपहार में दिया था और शिवानी ने कभी भी दूसरा पेंसिल बाक्स नहीं खरीदा। पेंसिल बाक्स जब पुराना लगने लगे, तो उसके पिताजी उसे रंग करके फिर नया बना देते। लम्बा, बड़ा, चौड़ा था, उसका लोहे का पेंसिल बाक्स। परीक्षा के दिन उसको वह अवश्य साथ ले जाती। वैसे तो शिवानी के मित्रों ने उसे कई प्रकार के पेंसिल बाक्स दिये हैं, पर वह उसी को ही अपने साथ रखती। शिवानी को जब उसे मित्र चिढ़ाते तो वह चिढ़ती बिलकुल नहीं बस यही कहती कि यह मेरा प्रिय एवं भाग्यशाली पेंसिल बाक्स है। शिवानी जोर–जोर से रोने लगी। उसकी आवाज सुनकर माँ भी दौड़ी हुई आई। शिवानी को रोते हुए देखकर बोली ''क्या हुआ बेटी, तुम रो क्यों रही हो? क्या किसी ने मारा है?'' शिवानी ने ''न'' कहा। ''तो क्या शिक्षक ने तुम्हें डाँटा है।'' ''न'' शिवानी ने सिर हिलाया। ''तो क्या हुआ?'' माँ ने पुनः पूछा। शिवानी ने सुबकते हुए, पेंसिल बाक्स वाली पूरी बात बताई। माँ ने शिवानी को चुप कराते हुए कहा कि ''यह लो नई पेंसिल अपना गृहकार्य करके जाओ स्वाति के जन्मदिन पर हम तुम्हारा पेंसिल बाक्स ढूंढ देंगे। शिवानी ने ''हाँ '' कह आँसू पोंछे, और अपने बस्ते से कापी निकालकर अपना गृहकार्य करने लगी। गृहकार्य करने के बाद शिवानी शीघ्र तैयार होकर स्वाति के जन्मदिन उत्सव में पहुँच गई। स्वाति, शिवानी के पड़ोस में रहती थी।

शाम का समय था। स्वाति अपनी सुंदर सी फ्रॉक पहनकर अपने सभी दोस्तों से बात कर रही थी। स्वाति ने भोलू से कहा भोलू हम सब दोस्तों के साथ कोई बढ़िया सा खेल खेलते हैं। शिवानी ने कहा ''कौन सा खेल?'' सभी बच्चों ने 'आईस पाईस' खेलने के लिए कहा, परन्तु शिवानी ने खेलने से मना कर दिया। तभी स्वाति बोली, क्या बात है, शिवानी ने स्वाति को पेंसिल बाक्स वाली पूरी बात बताई। स्वाति ने थोड़ी देर का मौन रखा, फिर बोली, क्यूँ न हम सब मिलकर शिवानी के घर जाकर उसका पेंसिल बाक्स ढूँढते हैं। शिवानी और स्वाति दोनों का घर पास–पास ही था। सारे बच्चे शिवानी के घर आकर पेंसिल बाक्स को ढूँढने में जुट गए।

थोड़ी देर बाद सभी अतिथि चले गए। शिवानी के सभी दोस्त भी पेंसिल बाक्स नहीं ढूँढ पाये और कुछ देर बाद खाना खाकर अपने घरों की ओर चले गए। स्वाति से मिलकर शिवानी भी अपने घर को चली गई। शिवानी थकी होने के कारण अपने कमरे में सोने के लिए चली गई। माँ ने शिवानी की तरफ देखा, और प्यार से थपकी देते हुए वापस अपने कमरे की तरफ निकल गई। अचानक बहुत तेज आवाज हुई। शिवानी हड़बड़ा कर उठ बैठी, उसे लगा कि घर में कोई है। परन्तु वह अकेली

क्या कर पायेगी?
शिवानी ने डरते-डरते सबसे पहले कमरे की बत्ती जलाई। इधर-उधर देखा कोई नहीं दिखा। उसने बस्ते की तरफ देखा वह अवश्य फैला हुआ था। पुस्तक कापी सब बस्ते से निकलकर चारों तरफ फैली हुई थी। शिवानी मन ही मन सोचने लगी, कि अभी रात में ही उठकर बस्ता ठीक से रखूँ, नहीं तो कोई न कोई पुस्तक अथवा कापी छूट गई, तो शाला में डाँट भी खानी पड़ेगी। सर्दी की रात में बिस्तर से उठना भी बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था। बिना उठे काम भी नहीं चलेगा। परन्तु ''चलो उठते हैं।'' शिवानी ने बत्ती जलाई। सबसे पहले एक एक पुस्तक कापी को सहेज कर बस्ते में रखने लगी। बिस्तर के नीचे एक मोटी पुस्तक भी गिरी हुई थी। शिवानी ने डंडे से पुस्तक को अपनी ओर जैसे ही खींचा उसके अंदर रखा पेंसिल बाक्स गिरा। शिवानी की खुशी का ठिकाना न था। वह पेंसिल बाक्स को हाथ में लिये ऐसे निहार रही थी, जैसे उसकी बहुत ही कीमती चीज उसे मिल गई हो। शिवानी के लिए माँ का दिया हुआ अमूल्य उपहार उनका आशीर्वाद हर पल आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है और करता रहेगा। शिवानी को बस प्रतीक्षा थी सुबह होने का उसे यह शुभ समाचार सभी को देना था। शिवानी ने उसे संभाल कर अपने बस्ते में पुनः रखा और निश्चिंत होकर सो गई, मीठी नींद में।

● लखनऊ (उ.प्र.)

__सही उत्तर__
उलझ गए *– सबसे अधिक अंक निखिल को प्राप्त हुए।*
छोटा बड़ा *– ९, ४, १०, ८, १, ५, ७, ३, ६, २*

सप्ताह के दिन

कविता : सुरेश कुशवाह 'तन्मय'

सोमवार के बाद
आ गया मंगलवार,
दो और दो को जोड़ें
तो हो जाते चार।

मंगलवार जुड़ा है
प्रिय बुधवार से,
एक-एक मिल ग्यारह
होते प्यार से।

गुरूवार भी आ जाता
फिर पीछे से,
मिलकर लगते सुन्दर
बाग-बगीचे से।

गुरूवार ने शुक्रवार को
हाँक लगाई,
तुम क्यों खड़े अकेले
संग आ जाओ भाई।

शनिवार-रविवार
कहें सब वाह-वाह,
मिलजुल कर सारे दिन
बन जाते सप्ताह।

हम भी मिलजुल के
सब आगे बढ़ते जायें,
आस-पास के सब
मित्रों को गले लगायें।

• भोपाल (म.प्र.)

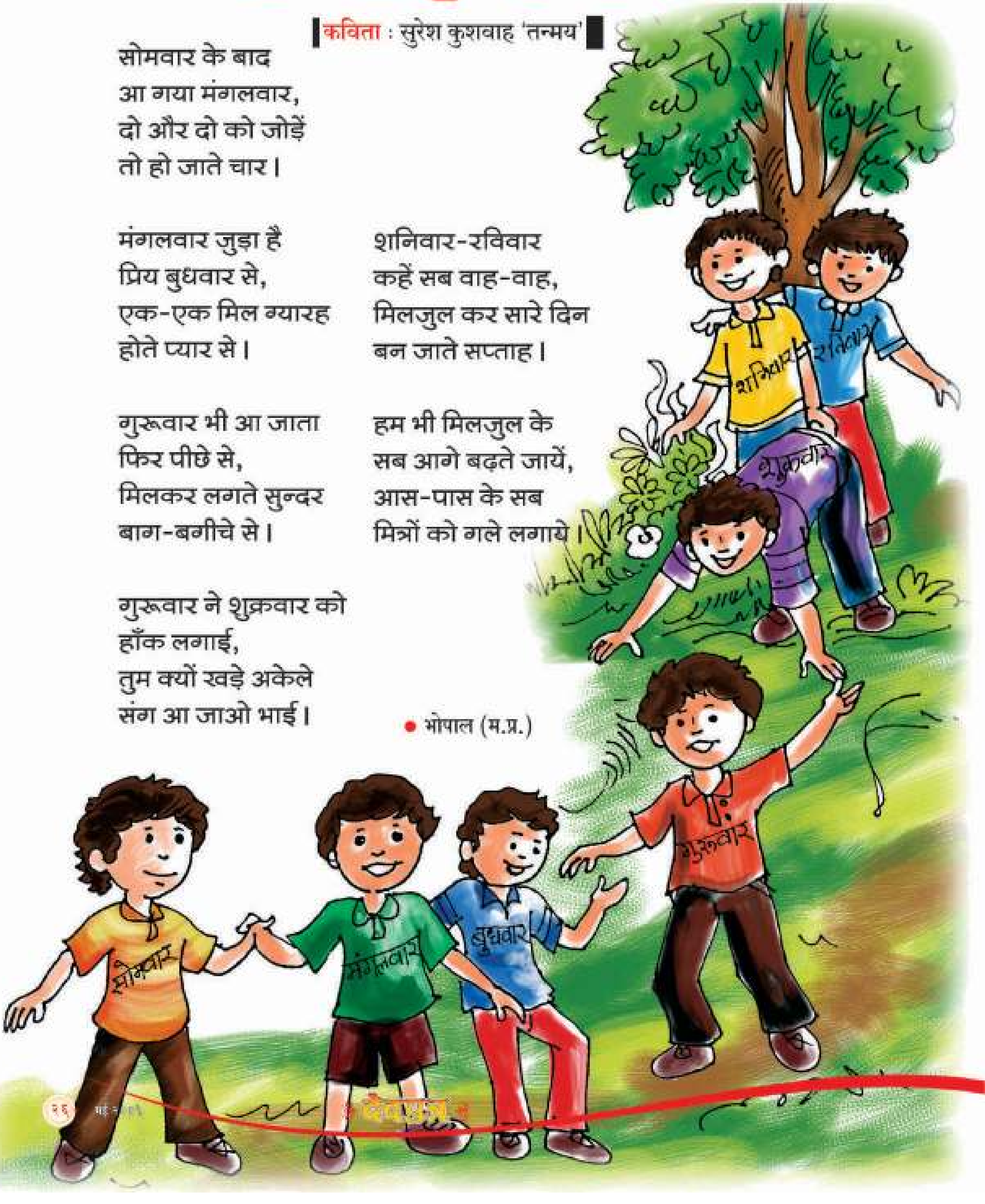

बचपन संग खेलें

बालगीत : डॉ. कृपाशंकर शर्मा 'अचूक'

आओ फिर बचपन संग खेलें,
फिर बचपन संग खेलें।
दुख-सुख इन दोनों से मिलके,
हँसी-खुशी के झेलें॥
एक अकेले नहीं दीखते
और अकेलापन भी
अपने साथ-साथ फिर होगा
अपना यह बचपन भी
आओ फिर बचपन संग खेलें,
फिर बचपन संग खेलें।
बढ़े आत्म विश्वास हमारा
अंधकार भी भागे
कदम नहीं पीछे को रखना
रखना आगे-आगे
आओ फिर बचपन संग खेलें,
फिर बचपन संग खेलें।
लंगड़ी टांग खेल को खेलो
जो तन फुर्ती लाता
खाना पीना जो कुछ खाया
वह सारा पच जाता
आओ फिर बचपन संग खेलें,
फिर बचपन संग खेलें।
रस्सी कूद खेल अद्भुत है
ताकत इससे आती
मेहनत करो संदेशा देती
अपना रंग दिखाती
आओ फिर बचपन संग खेलें,
फिर बचपन संग खेलें।
मन रोमांचित करे सितोलिया
यह भी खेल निराला
छोटे सात पत्थर टुकड़े
हो अचूक मतवाला
आओ फिर बचपन संग खेलें,
फिर बचपन संग खेलें।
दुख-सुख इन दोनों से मिलके
हँसी-खुशी के झेलें॥

• जयपुर (राज.)

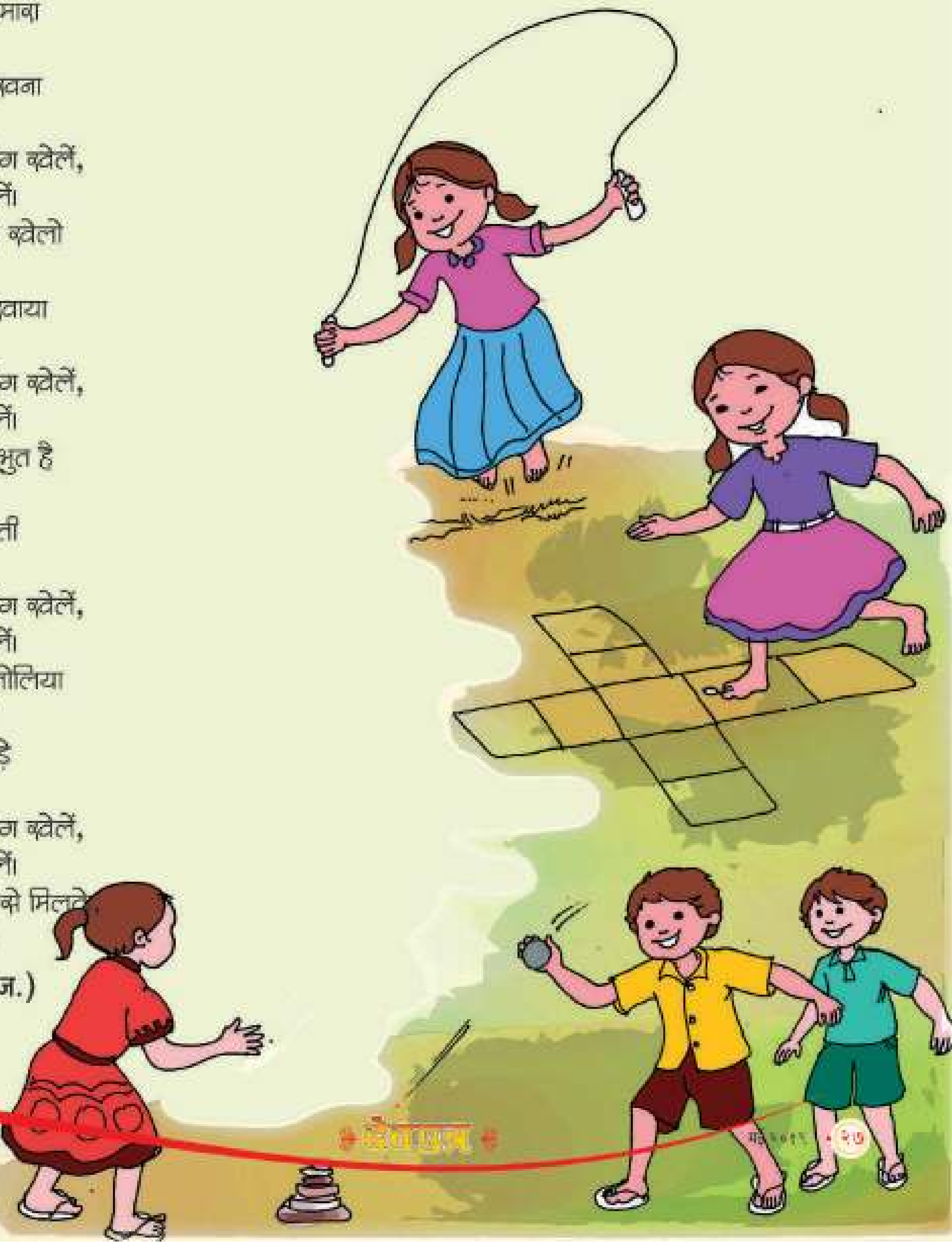

सच्ची बात

प्रसंग : पुष्पेश कुमार 'पुष्प'

एक बार एक सेठजी ने किसी विशेष अवसर पर दो पंडितों को भोजन करने के लिए आमंत्रित किया। आमंत्रित पंडितों का सेठ जी ने बहुत आदर सत्कार किया। भोजन के पूर्व एक पंडित स्नान करने गये, तो सेठजी ने दूसरे पंडित से कहा– ''महाराज! आपके मित्र तो महाज्ञानी लगते हैं।''

भला ब्रह्मण में इतनी उदारता कहाँ कि दूसरे की प्रशंसा सुन सके। वे मुह बिगाड़कर बोले– ''महाज्ञानी तो इसके पड़ोस में भी नहीं रहते, यह तो निरा बैल है।'' यह सुनकर सेठ जी चुप हो गए।

जब दूसरा पंडित स्नान करने गया तो सेठ जी ने पहले पंडित से कहा– ''महाराज! आपके मित्र तो महान विद्वान मालूम पड़ते हैं।'' ईर्ष्यालु पंडित ने अपने हृदय की गंदगी बिखेरते हुए कहा– ''सेठ जी! आप यह क्या कह रहे हैं? उसे विद्वान कहना तो सरासर विद्या का अपमान करना है। वह तो कोरा गधा है, गधा!''

जब भोजन का समय हुआ, तो एक पंडित के सामने घास और दूसरे पंडित के आगे भूसा रख दिया। यह देखकर दोनों पंडित क्रोध से बौखला गये और बोले– ''सेठ जी! आप हम लोगों को आमंत्रित कर अपमान कर रहें हैं। हम लोगों के साथ ऐसा उपहास क्यों?''

सेठ जी नम्रता से हाथ जोड़कर बोले– ''महाराज, आप दोनों ने ही तो एक दूसरे को गधा और बैल कहा था। बस गधे और बैल के योग्य ही मैंने भोजन की व्यवस्था करवाई और आपके आगे रख दी। सब इसमें मेरा क्या दोष। मैं तो आप दोनों को ही विद्वान समझता था, पर सच्ची बात तो आपने स्वयं बता दी।''

• **बाढ़ (बिहार)**

ऐसे हुई चोरी
चित्रकथा- संकेत गोस्वामी
सेठ रामलाल के यहां दूसरी बार चोरी हो गई-
हे भगवान! मैं फिर लुट गया..
उसके पड़ौसी चांदमल को पता चला तो वह उसे धीरज बंधाने उसके घर आया-
..धीरज रखो, रामलाल..जो होना था, हो गया..
..पर मित्र जब चोर चोरी करने के लिए तिजोरी का ताला तोड़ रहे थे.. क्या उस शोर से तुम्हारी नींद नहीं खुली?
..उन्होंने ताला तोड़ा ही कहां..चांदमल..

..चोरों ने चुपके से मेरे तकिये के नीचे से चाबियां निकाल ली
और आराम से तिजोरी खोल कर सारा रुपया पैसा ले गए..
पिछली बार भी तुम्हारे यहां चोरी इसी तरह हुई थी न..?
हां, चांदमल
तो तुम हमेशा चाबियां तकिये के नीचे क्यों रखते हो ? किसी और जगह भी तो रख सकते थे न..?
हां..अब से चाबियां कहीं और रखूंगा क्योंकि इस जगह का तो चोरों को पता हो गया है.

कुछ समय और बीता कि रामलाल के यहां फिर से चोरी हुई. इस बार भी चोर चाबी से ताला खोलकर सब ले भागे..
हे भगवान! क्या मैं लुटने के लिए ही कमाता हूं?
अबकी बार उसके पड़ोसी चांदमल को पता चला तो वह रामलाल पर बिफर पड़ा-
लापरवाह आदमी, तुम फिर चाबियां अपने तकिये के नीचे रखकर सो गए होगे..
नहीं मित्र नहीं..
फिर इस बार चाबियां कहां थी?
..खिड़की के ऊपर रोशनदान पर रखी थी.
फिर चोरों को पता कैसे चला?
दरअसल..
..मैं यह भूल न जाऊं कि तिजोरी की चाबी खिड़की के ऊपर रोशनदान पर रखी है, मैंने यह एक कागज पर लिखकर उसे तकिये के नीचे रख लिया था..
..न जाने इसे कब अक्ल आएगी?
समाप्त.

मामा के गाँव चलेंगे

कविता : नरेन्द्र मण्डलोई 'मांडलिक'

छुट्टियों में मामा के गाँव चलेंगे।
ठंडी-ठंडी आमों की छाँव चलेंगे।
पके-पके आमों का पीयेंगे रस।
एक दो तीन नहीं पूरे दस के दस।
बस से नहीं, साथ पाँव-पाँव चलेंगे।
छुट्टियों में मामा के गाँव चलेंगे।
नानी बनाएगी हलुआ, पूरी-खीर।
नहाने को जाएंगे नदियाँ के तीर।
देव-दर्शन को बैठकर नाव चलेंगे।
छुट्टियों में मामा के गाँव चलेंगे।
रामू, श्यामू, गोलू, कालू मित्र मिलेंगे।
पुरानी यादों के मधुरिम चित्र मिलेंगे।
खेड़ापति अखाड़ें में दाँव चलेंगे।
छुट्टियों में मामा के गाँव चलेंगे।

• दिगठान (म.प्र.)

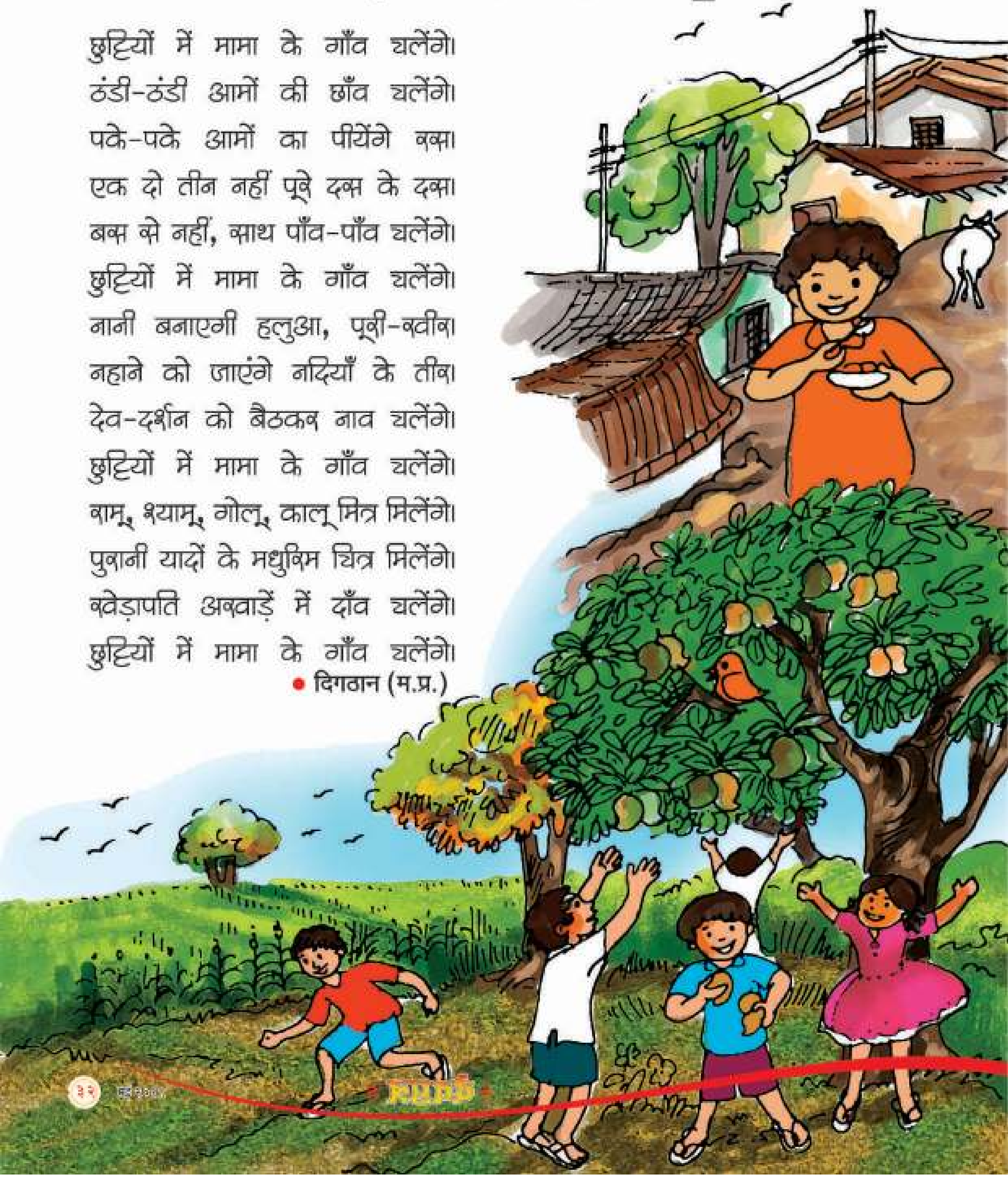

(बाल प्रस्तुति)

आलस्य का दुष्परिणाम

कहानी : किसलय हर्ष

चक्रपाणि गाँव में डगरु और झटरु नाम के दो कुत्ते रहते थे। दोनों हमेशा साथ ही रहते और गाँव की गलियों, चौक-चौराहों पर घूमते रहते थे। दोनों इधर-उधर घूम कर ही अपना खाना-पीना ढूंढ लेते थे और कहीं पर भी सो जाया करते थे।

साथ-साथ रहने के बावजूद दोनों के व्यवहार में जमीन-आसमान का अंतर था। डगरु कुत्ता जहाँ सतर्क प्रवृत्ति का था और वह हर आने जाने वालों पर दृष्टि रखा करता, वहीं झटरू कुत्ता आलसी प्रवृत्ति का था और उसे केवल अपने खाने-पीने की ही चिंता रहती थी।

एक बार रात के समय दोनों कुत्ते गाँव के चौराहे पर सो रहे थे। तभी डगरु को किसी अपरिचित की आहट सुनाई दी। आहट सुनकर वह सतर्क हो गया और आगे बढ़कर जोर-जोर से भौंकने लगा। कुत्ते की भौंकने की आवाज सुनकर वह अपरिचित व्यक्ति तेज गति से भागकर अंधेरी रात में ही कहीं दूर निकल गया।

डगरु ने जाकर झटरू को उस अपरिचित व्यक्ति के बारे में बताया, किन्तु आलस्यवश उसने डगरु को चुपचाप सो जाने का परामर्श दिया।

डगरु उसकी बात सुनकर व्याकुल हो गया और वह अकेले ही गाँव की गलियों, चौक-चौराहों पर घूमने लगा। घूमते-घूमते वह गाँव के मंदिर के पास स्थित संस्था कार्यालय पहुँच गया, जहाँ पर सांस्कृतिक, वैवाहिक आदि कार्यक्रमों के लिए सभी आवश्यक सामान रखे जाते थे।

कुछ समय बीतने के बाद उसे फिर उसी अनजान व्यक्ति की आहट सुनाई दी। उसने देखा कि संस्था कार्यालय की दीवार को फांदकर वही व्यक्ति बहुत सी बोरियों की पोटलियाँ बनाकर धीमे-धीमे चोर वाली चाल में जा रहा है।

डगरु को तब अनुमान हो गया कि वह अनजान

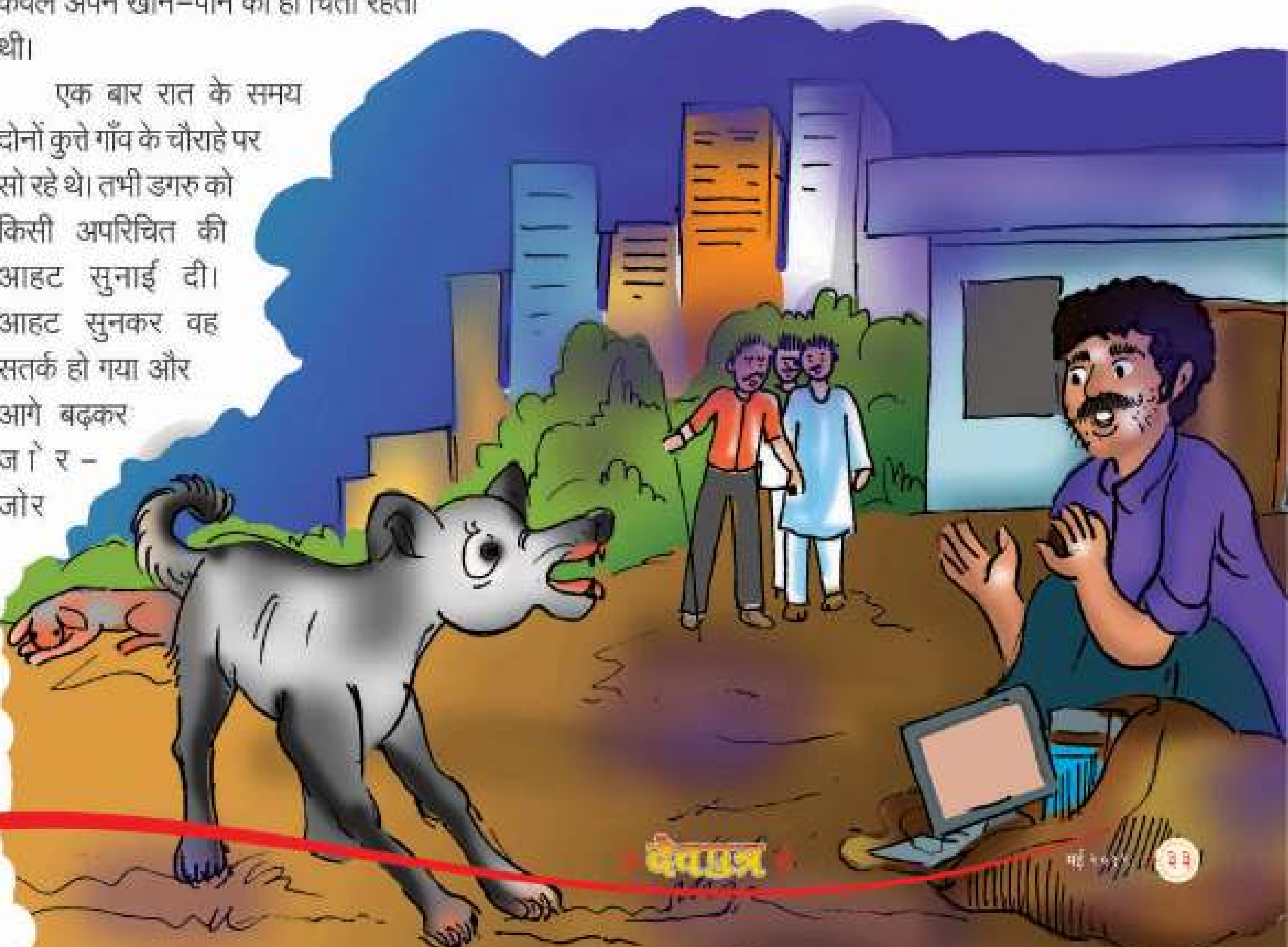

व्यक्ति एक चोर है, इसलिए उसने तुरंत ही भौंकना प्रारंभ कर दिया और भौंकते हुए जोर से जाकर उसे दबोच लिया।

डगरु कुत्ते के अचानक हुए आक्रमण से चोर हड़बड़ा गया। उसने पास में ही पड़ी हुई लाठी को उठाकर उस पर प्रहार करना प्रारंभ कर दिया। लाठी के प्रहार से डगरु कुत्ता जोर-जोरसे भौंकने और रोने लगा।

डगरु कुत्ते की इस तरह की आवाज सुनकर आसपास के घर वालों ने अपने-अपने घर की बत्तियाँ जला दी और सभी भाग कर संस्था कार्यालय की तरफ आए। संस्था कार्यालय के पास आने पर उन्होंने जब चोर और डगरु को आपस में लड़ते हुए देखा तो सभी दंग रह गए।

गाँव वालों ने तब चोर को पकड़ लिया। चोर की बड़ी पोटलियों को जब सबने खोला तो संस्था कार्यालय के सभी कीमती सामान उसमें से बाहर निकले। यह बात रात में ही जंगल में आग की तरह पूरे गाँव में फैल गई।

सुबह होने पर चोर को पुलिस के हवाले कर दिया गया। तब गाँव के सभी लोग ने डगरु कुत्ते की सतर्कता और स्वामिभक्ति की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

गाँव के सरपंच ने तब डगरु कुत्ते की बहादुरी को देखते हुए, उसे गाँव का मुख्य सचेतक प्रहरी बना दिया। उसके अच्छे से खाने-पीने और रहने की व्यवस्था भी संस्था कार्यालय के पास ही कर दी गई।

इस तरह की व्यवस्था हो जाने से डगरु कुत्ते के दिन सुख सुविधा से बीतने लगे। अब वह अपने उत्तरदायित्व के प्रति और भी सतर्क हो गया।

उसके सुख-सुविधा भरे जीवन को देखकर झटरु कुत्ते को अपने ऊपर बड़ी ग्लानि हुई। वह सोचने लगा कि अगर उस रात वह भी आलस्य छोड़कर डगरु की तरह सतर्क रहता तो आज उसका भी जीवन इसी तरह सुख-सुविधा में बीतता।

आज उसे आलस्य से होने वाले दुष्परिणाम का पता चल गया और तब उसने भी आलस्य को हमेशा-हमेशा छोड़ देने का संकल्प लिया।

• मलहरा (झारखण्ड)

।। बाल प्रस्तुति ।।

पहेलियाँ

• जयेन्द्र

(१)

गुटरं गूं, भाई गुटर गूं,
रंग सलेटी छत पर हूँ।
दाना फेंको तो मुझे!
आ जाऊंगा आंगन में ?

(२)

ऊँचा सा पहाड़ उस पर फूलों की बहार।
माली तोड़ न सके, मालिन बीन न सके।।

(३)

पानी से पैदा हुई, पानी में मर जाए,
आग लगाकर फूंक दो तो अमर हो जाए।

(४)

घोड़ा दौड़ा पटरी पर,
फिर उड़ जाएगा ऊपर।
बादल के प्यारे घर में,
दूर हवा अन्दर में।

(५)

तीन अक्षर का मेरा नाम,
तरकारी में आता काम।
प्रथम कटे तो बन्दूक बने,
अन्त कटे तो थैला बने।

(६)

एक गुड़िया छोटी सी,
लाला बाई नाम है।
पहनी है वो घाघरा,
दस पैसा दाम है।

(७)

पानी का मटका,
हवा में अटका?

(उत्तर इसी अंक में)

• भैसोदामंडी (म.प्र.)

माता-पिता

कविता : श्रीराम मीना

पिता पेड़ से माँ फुलवारी।। बच्चे किलकारी।
माँ की लोरी मन को भाये।। त्याग, पिता का बलिहारी।
तुलसी चौरा घर का मंदिर।। पूजे हमरी मेहतारी।
मुई गिलहरी गौरेया भी।। बन जाती है, सहकारी।
पिता मनाये मातृ दिवस को।। फूली घर की फुलवारी
पितृ दिवस पर माँ के ठुमके।। गूंजे घर में किलकारी।
सबके जन्म-दिवस यादों में।। कोई किसी को भूले ना।
एक दूजे की हिम्मत मिलके।। बन जाती है बलकारी।
संकल्पों से मनें जन्मदिन।। तब होते हैं हितकारी।
आशीषों से झोली भरती।। तब लगते हैं शुभकारी।
कैक, मोमबत्ती की रस्में।। हमें लगे है दुखकारी।
पूजा पाठ नहीं करते तो।। सब लगते हैं मक्कारी।

• मालाखेड़ी (म.प्र.)

चित्र बनाकर रंग भरो

• राजेश गुजर

हरे भरे उद्यान के पौधों के फूल और पत्तियों को तोड़कर कौन खा रहा है? उस नटखट व शैतान प्राणी को देखने के लिए एक से ५४ तक बिंदु मिलाओ और फिर उसमें सुंदर रंग भरो।

• मेड़तासिटी (राज.)

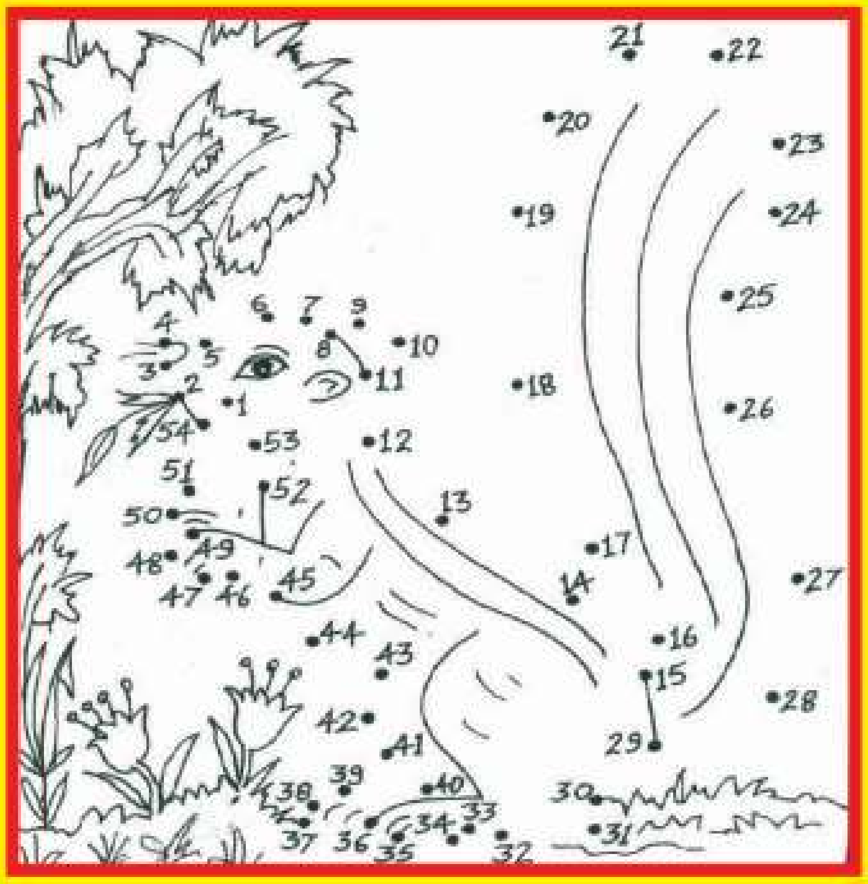

कोयल फिर बोली

कहानी : सुशील सरित

टिन्नी अभी सो ही रही थी कि उसे आँगन में से आती कूहू-कूहू की आवाज सुनाई दी। ''अरे! माँ ये कौन इतनी अच्छी आवाज में बोल रहा है।'' टिन्नी ने आँखें मलते हुए माँ से पूछा। ''लो सात बज रहे हैं और तुम अभी तक सो ही रही हो,'' माँ ने रसोई से ही टिन्नी को डाँट लगाई। ''उठ तो गई माँ! लेकिन ये तो बताओ कि ये बोल कौन रहा है' टिन्नी ने फिर पूछा। ''कहाँ कौन?'' माँ को अभी भी टिन्नी की बात समझ में नहीं आई। ''अरे! माँ आँगन में से वो कूहू-कूहू की आवाज आ रही है वहीं,' टिन्नी ने फिर दोहराया। तभी कूहू-कूहू की आवाज दोबारा सुनाई दी। ''देखो-देखो माँ वही आवाज'' टिन्नी ने माँ को ध्यान दिलाया। ''अच्छा ये। ये तो कोयल है जब सावन का महीना आता है और आसमान में बादल आते हैं तभी यह बोलती है।'' माँ ने टिन्नी को पूरी बात समझायी। टिन्नी बिस्तर से उठकर आँगन में चली गयी। 'अरे यह तो छोटी सी काली सी चिड़िया है लेकिन यह बोलती है तो बड़ा अच्छा लगता है। अगर ये चिड़िया उसके कमरे में आकर इतना मीठा गाना गाने लगे तो कितना अच्छा लगेगा', टिन्नी ने सोचा। शाम तक टिन्नी पिताजी के साथ अपनी मौसी के घर चली गयी। मौसी का घर बहुत बड़ा था। वहाँ राजू भैया भी था। वह टिन्नी को लेकर पूरा घर घुमाने ले गया। मकान सचमुच बहुत बड़ा था ''अरे यहाँ तो बहुत सारी चिड़ियाँ हैं'', आँगन में पिंजरों में ढेर सारी चिड़ियों को देखकर टिन्नी खुशी से उछल पड़ी। ''हाँ, माँ को अच्छा लगता है।'' राजू ने समझाया।

''अरे, यहां तो वो काली कोयल भी है जो बड़ा मीठा गाती है'' एक पिंजरे में कोयल को देखकर टिन्नी उछल पड़ी।

''कहो टिन्नी, क्या देख रही हो'' टिन्नी को ढूँढ़ती हुई मौसी वहीं आ गई। ''मौसी ये बोलने वाली चिड़ियाँ'' टिन्नी अभी भी कोयल को ही देख रही थी। ''तुम्हें पसंद है तो तुम ले जाओ'', मौसी ने टिन्नी को कोयल का पिंजरा पकड़ा दिया। ''सच मौसी'', ''हाँ-हाँ ले जाओ।''

टिन्नी ने पिंजरा लाकर अपने कमरे में रख

दिया। रात भर टिन्नी को नींद नहीं आई। सुबह हो तो कोयल बोलेगी तब कितना अच्छा लगेगा। टिन्नी रात भर बिस्तर पर लेटे–लेटे यही सोचती रही।

सुबह की धूप जैसे ही खिड़की से आई टिन्नी अपने बिस्तर पर उठकर बैठ गई। कोयल का पिंजरा मेज पर ही रखा था। आसमान में थोड़े बादल भी थे। धीरे–धीरे एक घंटा बीत गया लेकिन कोयल चुप बैठी रही। ''टिन्नी, क्या बात है आज ब्रश भी नहीं किया।'' टिन्नी को बिस्तर से उठते न देख माँ ने रसोई से ही आवाज लगाई। माँ, माँ, ये कोयल तो बोल ही नहीं रहीं है।'' ''क्या कह रही हो'' माँ को रसोई से टिन्नी की

बात समझ में नहीं आई। ''अरे! यहाँ आओ तो बताऊँ''। ''क्या बात है?'', माँ हाथ पोंछती हुई टिन्नी के पास आ गयीं। ''देखो न माँ कल मौसी के घर से मैं इस कोयल को ले आई थी लेकिन इतनी देर हो गयी ये बोल ही नहीं रही हैं'', टिन्नी ने कोयल की तरफ इशारा किया।

''कोयल बोलेगी तो, लेकिन इसकी आवाज शायद तुम्हें उतनी अच्छी न लगे, जितनी कल वाली कोयल की लगी'', माँ ने पिंजरे पर एक दृष्टि डाली। ''क्यों माँ?'' टिन्नी को बात समझ में नहीं आई। ''देखो टिन्नी, अगर तुम्हें कोई ऐसे ही पिंजरे में बन्द कर दे तो तुम्हें कैसा लगेगा'' माँ ने टिन्नी को ध्यान से देखते हुए पूछा। ''मुझे कोई क्यों बंद करेगा।'' टिन्नी को बात समझ में नहीं आई। ''मान लो बन्द कर दे तब'' माँ ने फिर प्रश्न किया।

''तब तो बहुत खराब लगेगा' टिन्नी ने कुछ सोचते हुए कहा। ''बस ऐसे ही इस कोयल को भी खराब लग रहा होगा, इसीलिए यह नहीं बोल रही है और मान लो बोलेगी भी तो वह उतना अच्छा तो नहीं ही होगा।'' माँ ने टिन्नी को समझाया और रसोई में चली गयीं। माँ के जाने के बाद टिन्नी काफी देर तक पिंजरे को देखती रही फिर वह उठी और पिंजरे को उठाकर आँगन में आ गयी। आँगन में आकर उसने पिंजरे का छोटा सा दरवाजा खोल दिया। कोयल पहले तो पीछे हटी फिर दरवाजे से निकलकर फुर्र से उड़कर आँगन की दीवार पर जा बैठी।

टिन्नी खड़ी–खड़ी उसे देखती रहीं पिंजरा उसने एक तरफ रख दिया उसी समय आसमान में फिर बादल आ गये। पता नहीं कोयल कब बोलेगी सोचती हुई टिन्नी पिंजरा उठा कर कमरे की तरफ बढ़ी ही थी कि अचानक आँगन कूहू–कूहू की कूक से गूँज उठा। कोयल फिर बोल रही थी और टिन्नी को लगा कि इस कोयल की कूक तो और भी ज्यादा मीठी है।

• आगरा (उ.प्र.)

मुद्रा भद्राय राजते

हेनरी आक्सिन्डेन। शिवाजी महाराज के राज्यारोहण समारोह में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रतिनिधि। समारोह में भारी वैभव और राजसी ठाट-बाट को देखकर वह बहुत प्रभावित हुआ। वह छात्रपति की वीरता के विषय में तो पहले से जानता था। लेकिन उस दिन सम्भ्रम में पड़ गया। रायगढ़ में उसके लिए जो आवास मिला था, वहीं पर बैठा कुछ चिन्तामग्न सा हो गया।

एकाएक एक विचार उसके मस्तिष्क में आया और उसकी आँखों में चमक आ गई। यह 'शिवराई मुद्रा' कितनी भद्दी है। बेडौल सा रूप। अनगढ़ अक्षर। भारतीय लोग सुन्दर सिक्के नहीं बना पाते। हमारी ईस्ट इण्डिया कम्पनी रायगढ़ के लिए सिक्के ढाल कर दे सकती है।''

हेनरी स्वराज्य के वित्तमंत्री रामचन्द्र पंत से मिला। उन्हें अपनी योजना समझाई और सिक्कों की ढलाई की एवज में एक सुविधा चाही- 'स्वराज्य' में ब्रिटिश सिक्के भी चलने दिए जाए।

वित्तमंत्री को योजना तो पसंद आ गई लेकिन मांगी गई सुविधा के नाम पर चतुर अंग्रेज की राजनीतिक चाल समझ कर वे सशंकित हो गए। वित्तमंत्री पन्त ने समझ लिया कि यह अंग्रेजी कूटनीति है कि उनका सिक्का चलने से जनता उनका भी प्रभुत्व मानने लगेगी और अंग्रेज यह मनोभूमिका बनाकर भारत में अपने राज्य की स्थापना करना चाहते हैं।

फिर भी वे छत्रपति के पास हेनरी के साथ चलने को राजी हो गए।

दोनों महल पहुंचे और योजना बताई। हेनरी ने एक ब्रिटिश सिक्का और एक शिवराई सिक्का निकाल कर छत्रपति के सामने रखा। शिवाजी ने दोनों सिक्के अपने हाथ में ले लिए और मुस्करा कर बोले- ''हेनरी ! शायद तुम मुद्रा की सुन्दरता के बारे में चिन्तित हो। हमारी मुद्रा तो राजमुद्रा की प्रतीक है-सुन्दरता की नहीं, शक्ति की प्रतीक। हमारे शिल्पकार जब चाहें तुम्हारी मुद्रा से अधिक सुन्दर मुद्रा बना सकते हैं। हमें इस संदर्भ में अंग्रेजों की सहायता की कोई आवश्यकता नहीं है।''

हेनरी ने मुंह लटका लिया और तभी रामचन्द्र पन्त की दृष्टि स्वराज्य की राजमुद्रा पर अंकित श्लोक पर पड़ी-

प्रतिपच्चन्द्रलेखेव वर्धिष्णुर्विश्ववन्दिता।
शाहसूनोः शिवस्यैषा मुद्रा भद्राय राजते।।

और श्लोक का अन्तिम चरण उनके मुख से स्पष्ट उच्चरित हो गया-

'मुद्रा भद्राय राजते'।

वे सोचते खड़े थे- सच ही मुद्रा की शोभा उनके शिल्प में नहीं राजशक्ति द्वारा उपलब्ध जनहित के कार्यों में है । और इसी कारण तो वह विश्ववन्दिता है। मुद्रा एक प्रतीक है, बच्चों का खिलौना नहीं और शिवाजी महाराज की मुद्रा और राजमुद्रा का रूप तो सचमुच प्रतिपदा की चन्द्रलेखा की तरह वर्धिष्णु है।

राजनीतिज्ञ हेनरी। छत्रपति की बात कितना समझा, यह वह जाने, लेकिन पन्त महाराज की बात समझ गये, यह उनके मुख पर हर्ष की रेखाओं से उभर आया था।

अंग्रेजी राजनीति का दांव विफल हो गया।

चिड़िया

कविता : भानुप्रताप सिंह

रोज सवेरे आती चिड़िया।
चूं चूं, ची–ची गाती चिड़िया।।

पंख फुलाकर खूब नहाती।
फुदक–फुदक कर दाना खाती।।

छोटे–छोटे तिनके चुनकर।
सुन्दर नीड़ बनाती बुनकर।।

कितना प्यारा लगता घर।
जब चहकती आंगन पर।।

नहीं कभी अलसाती चिड़िया।
चूं–चूं, ची–ची गाती चिड़िया।।

• चकपैगंबरपुर (उ.प्र.)

बिंदु मिलाओ रंग भरो

• राजेश गुजर

बच्चों, इस चित्र में
कौनसा प्राणी है।
१ से ६० तक
बिंदुओं को मिलाओ
और रंग भरो।

चुन्नू की टोपी

पुनर्लिखित लोककथा : डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव

चुन्नू चूहा बड़ा ही शरारती चूहा था। वह दिनभर नए-नए कपड़े पहनकर नंदन वन में यों ही घूमता-फिरता। उसके माता-पिता उसे टोकते- ''बेटे यों ही फालतू घूमना ठीक नहीं है। यह तो समय की बर्बादी है। कभी-कभी ढंग से मन लगाकर पढ़ भी लिया करो।''

चुन्नू चूहा माता-पिता की बात का जवाब देते हुए कहने-''माँ-पिता जी, मैं पढ़ता तो हूँ। कभी-कभी घूमना भी तो चाहिए। घूमने-फिरने से शरीर चुस्त बना रहता है।'' चुन्नू चूहे की बात सुनकर उसके माता-पिता चुप रह गये।

चुन्नू चुहे को सजने-संवरने का बड़ा शौक था। इसलिए वह तरह-तरह की सज-धज वाले कपड़े पहना करता। एक दिन चुन्नू चूहे को नंदन वन की सड़क पर कपड़े की एक सुन्दर चिन्दी मिल गई। चुन्नू चूहे ने उस कपड़े की चिन्दी को उठा लिया। वह सोच रहा था- चलो इस कपड़े की चिन्दी से अपने लिए बढ़िया सी टोपी

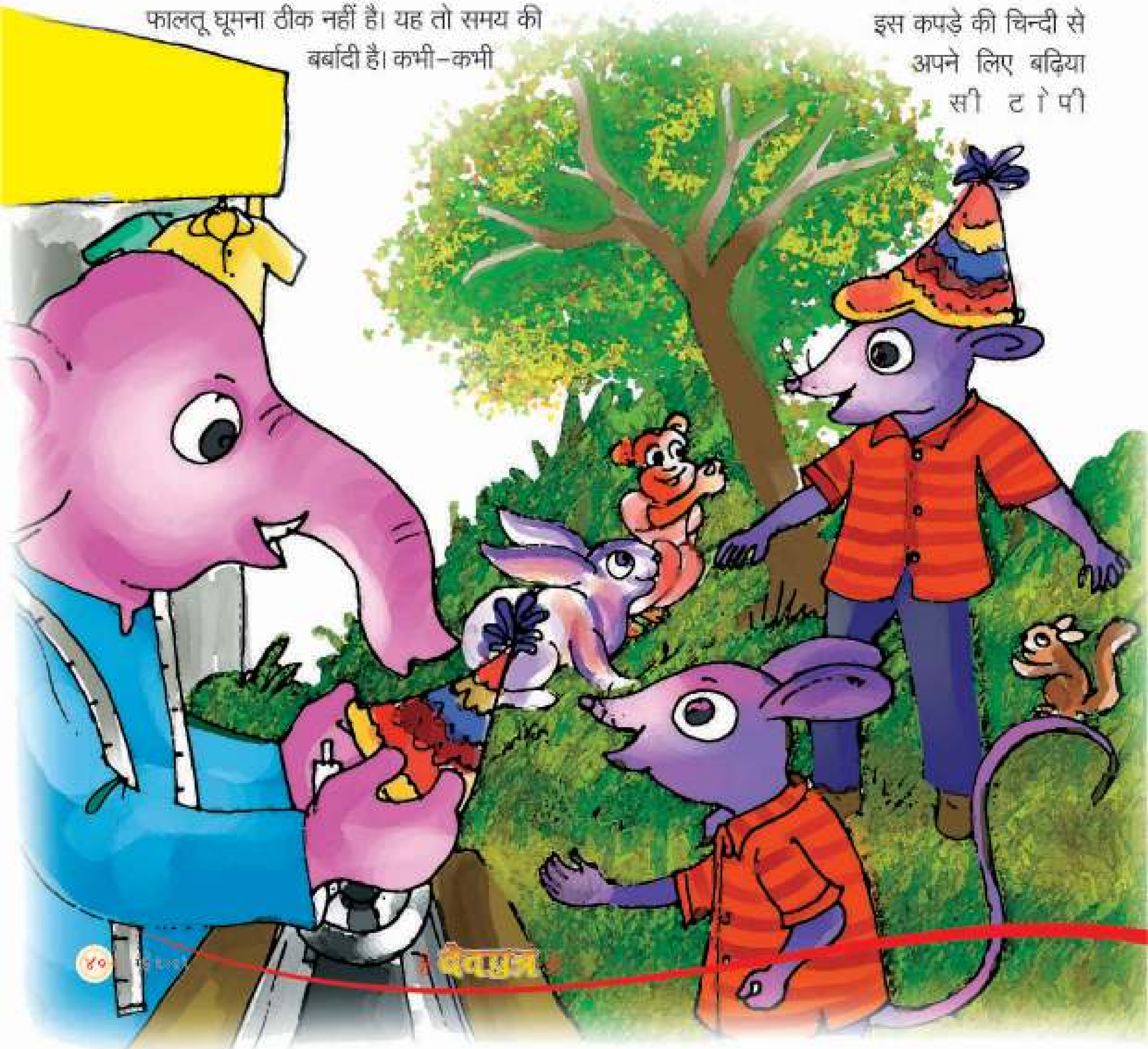

सिलवाऊँगा और जब मैं टोपी पहनकर निकलूंगा तब सारे जंगल के जानवर मुझे ही देखेंगे।

यह सोचकर चुन्नू चूहा भोला हाथी की सिलाई की दुकान पर जा पहुँचा। वह भोला हाथी से बोला– ''दादा, इस कपड़े की चिन्दी से मेरे लिए एक बढ़िया सी टोपी सिल दीजिए।'' चिन्दी को देख भोला हाथी ने चुन्नू को डाँट लागते हुए कहा– ''चुन्नू बेटे, तुम्हें इतनी भी समझ नहीं। ये जरा सी कपड़े की चिन्दी ले आये। इससे कहीं टोपी बन सकती है। तुमने कभी अपने सिर को देखा है।''

भोला हाथी की बात सुनकर चुन्नू को कहने लगा– ''दादा क्या मेरा सिर बहुत बड़ा है जो...आप.....।''

भोला हाथी ने चुन्नू को समझाते हुए कहा– ''बेटे, अपनी टोपी के लिए बड़ा सा कपड़ा लाओ। मैं तुम्हारे लिए एक सुन्दर सी कलंगी वाली टोपी सिल दूंगा। तुम्हारी टोपी देखकर सारे जंगल के जानवर चकित रह जायेंगे।''

चुन्नू चूहा भोला हाथी की बात समझ चुका था। वह बोला– ''ठीक है दादा, मैं आज ही टोपी के लिए बड़ा सा कपड़ा लेकर आता हूँ। तब मेरे लिए सुंदर सी टोपी तैयार कर देना। चुन्नू चूहा तुरंत गधे जी की दुकान–गर्दभ वस्त्र भंडार पहुँचा। वहाँ उसने गधे जी से कहा– ''काका जी! मुझे थोड़ा सुन्दर सा कपड़ा दे दीजिए ताकि मैं अपने लिए टोपी बनवा सकूँ।''

गधे जी बोले– चुन्नू बेटा! पहले अपनी माँ या पिताजी से पैसे लेकर आओ। तब मैं तुम्हें कपड़ा दे दूंगा।''

चुन्नू चूहा गधे जी की बात सुनकर बिगड़ पड़ा– ''जानते है काका जी! मैं, चाहूँ तो आपकी दुकान के सारे कपड़े कुतर सकता हूँ। आप मुझसे ही पैसे मांग रहे हैं।'' गधे जी बोले– ''भैया! यदि मैं मुफ्त में ऐसे ही लोगों को कपड़ा देता रहा तो बस! मेरी तो दुकान चल गई। मुझे तो दुकान बन्द करनी पड़ेगी। मैं अपने परिवार को क्या खिलाऊँगा।''

चुन्नू चूहे ने तर्क दिया– काका जी! मैं कोई पेंट–कमीज या कुरते के लिए कपड़ा थोड़े ही मांग रहा हूँ। मैं तो थोड़ा सा कपड़ा टोपी के लिए चाहता हूँ। आप नहीं देना चाहते तो न दें, कोई बात नहीं। कल सुबह देखकर आपकी दुकान में कपड़ों का क्या हाल होता है। ऐसा कहकर चुन्नू चूहा वहाँ से चलने को हुआ। तभी गधे जी झट से बोले– ''चुन्नू बेटे, मैं तुम्हारी टोपी के लिए बढ़िया सा कपड़ा देता हूँ। आखिर तुम भी तो मेरे बेटे जैसे हो।''

''ऐसा कहकर गधे जी ने चुन्नू को टोपी के लिए सुंदर सा कपड़ा दे दिया। कपड़ा पाकर चुन्नू चूहा बड़ा खुश था। वह सीधा भोला हाथी की दुकान पर पहुँचा। भोला दर्जी ने चुन्नू के लिए एक घण्टे के भीतर सुंदर कलंगी वाली टोपी बनाकर दे दी।''

बस, अब क्या था। चुन्नू चूहे ने कलंगीदार टोपी अपने सिर के हवाले की और बड़े रौब से राजा–महाराजाओं की तरह चल पड़े। अब जंगल के सारे जानवरों की आँखें चुन्नू चूहे की कलंगीदार टोपी पर थी। सबको टोपी अच्छी लग रही थी।

जो कोई चुन्नू चूहे से कुछ बात करता। चुन्नू सीधे मुँह उसका जवाब ही नहीं देता। उसे तो अपनी टोपी की शान थी। कुछ जानवरों ने सोचा क्यों न चुन्नू चूहे को सबक सिखाया जाए, क्यों न इसकी टोपी को कहीं गंदगी में या गंदे नाले में गिरा दिया जाए। तब पीलू बंदर ने सबको समझाया– ''भाइयो! ऐसा करना गलत है। चुन्नू तो अभी बच्चा है। पर हम लोग तो समझदार हैं। तभी रानू खरगोश बोला– ''हाँ भाइयो! पीलू सही कह रहा है। आप जानते हैं अपने लिए तो सब जीते हैं कभी हमें दूसरों के लिए भी जीकर देखना चाहिए। सच्ची प्रसन्नता में शामिल होंगे।

अब तो, चुन्नू चूहा सुंदर कलंगी वाली टोपी पहनकर नाच रहा था। साथ में जंगल के और दूसरे साथी–भालू, खरगोश, हिरण, बंदर, गिलहरी आदि भी उसका साथ दे रहे थे।

• **ग्वालियर (म.प्र.)**

<u>*सही उत्तर*</u>

पहेलियां – *(१) कबूतर (२) तारे (३) ईंट (४) हवाई जहाज (५) बैंगन (६) लाल मिर्च (७) नारियल*

आपकी पाती

● **दिलीप भाटिया, रावतभाटा (राज.)**

आपकी पत्रिका में गुणवत्ता रचनाओं का चयन कर, इन पौधों में सम्पादन की सिचांई कर, सकारात्मक की खाद डालने के साथ, नकारात्मक के कीड़ों से बचाने की सावधानी रखने से, प्रकाशित रचनाओं से पाठक के मस्तिष्क को सुगन्धित ऊर्जा से महकते पुष्प एवं समाधान प्रस्तुत करने वाले मिठास से छलकते फल प्राप्त होते हैं। यहीं गुण पत्रिका की सफलता एवं सार्थकता का साक्षात् प्रमाण है।

****

● **राजा चौरसिया, उमरियापान (म.प्र.)**

देवपुत्र का मार्च २०१९ अंक मिला, मन सुमन सा खिला अतः आभार सहित नमस्कार। आपने अपनी बात के अंतर्गत यह उजास सा उजागर किया है कि भारत गाँवों में बसता हैं। संस्कार एवं संस्कृति की संजीवनी अन्नपूर्णा माटी है। आज शहरीकरण की बहुत हवा चल रही है। मौलिकता पर आधुनिकता का रंग चढ़ा है। फोर व्हीलर के सामने बैलगाड़ी और हैंडपंप के सामने कुए चले गए हैं। ग्रामीण पृष्ठभूमि की प्रतिभाएँ प्रावीण्य सूची के अनुसार निरंतर बढ़त पर हैं। ग्रामकथांक तब से अब तक की मोरपंखी झलक है। कहानियों के माध्यम से भारत माता ग्रामवासिनी का चित्रण पाठक के चित्त में उतरना स्वाभाविक है। नयनभिराम मुखपृष्ठ तो उत्कृष्ट रचनाओं का संकेत देता है। बहुरंगी साज-सज्जा में आकर्षण पुष्प वर्षण जैसा है। निर्देशन, चयन और संपादन के लिए आपकी टीम भी प्रशंसनीय है। नई पीढ़ी को संस्कारित करने की दिशा में यह सारस्वत बाल पत्रिका अद्वितीय है। इसके प्रति ढेर सारी शुभकामनाएँ।

चित्र बनाओ ● राजेश गुजर

बच्चो, कछुए का चित्र

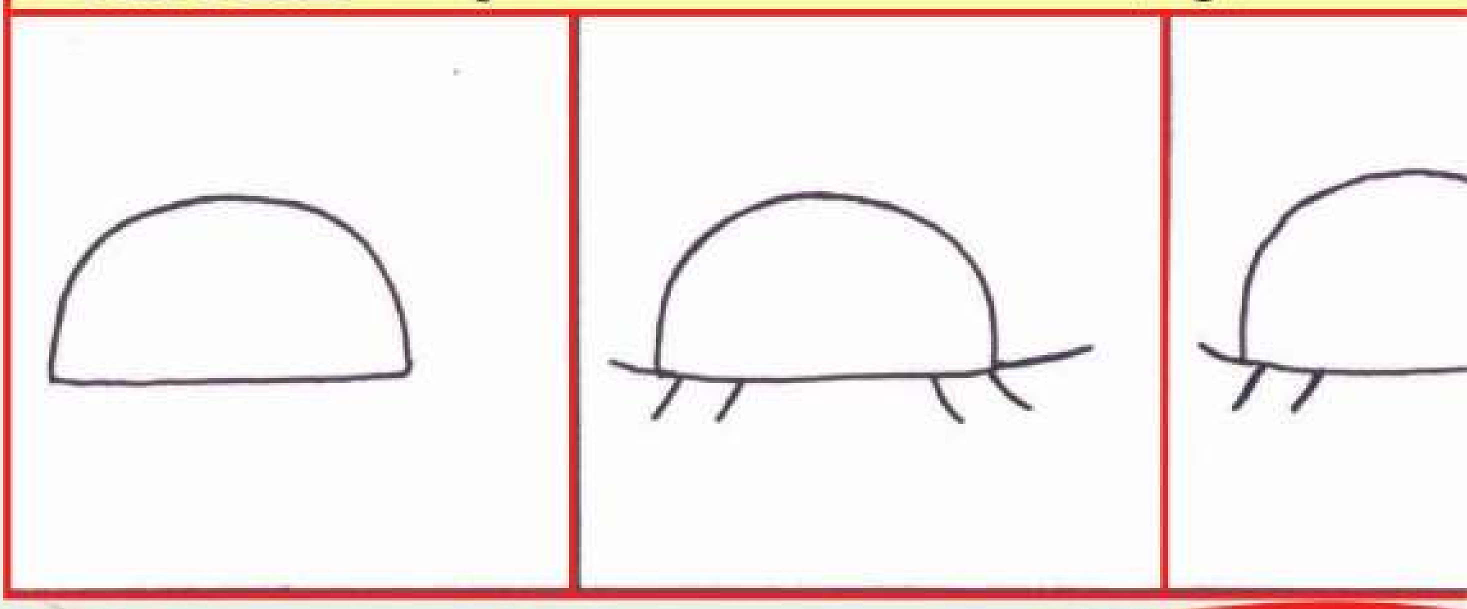

चुटकुले

– विष्णुप्रसाद चौहान

पत्नी - कहाँ हो?
पति- मेरा एक्सीडेंट हो गया है, अस्पताल जा रहा हूँ।
पत्नी - ध्यान देना, भोजन का डिब्बा टेढा ना हो जाए वरना दाल गिर जाएगी।

****

पिता बेटे पर गुस्सा करते हुए- एक काम ढंग से नहीं होता तुझसे, तुम्हें पुदीना लाने के लिए कहा था और तुम ये धनिया ले आए। तुझ जैसे बेवकूफ को तो घर से निकाल देना चाहिए।
बेटा- पिताजी, चलो इकट्ठे ही चलते हैं।
पिता- क्यों?
बेटा - क्योंकि माँ कह रही थी कि ये मैथी है।

टीचर (छात्र से) - जिसको सुनाई नहीं देता उसको क्या कहेंगे?
छात्र - कुछ भी कह दो! उसे कौन सा सुनाई देगा!!

****

खरीददार - भैंस की कीमत पाँच हजार रुपए तो बहुत अधिक है।
मालिक - वह कैसे?
खरीददार - इसकी एक आँख जो नहीं है।
मालिक - आपको इससे दूध लेना है या कसीदाकारी करानी है।

****

पत्नी बादाम खा रही थी...
पति- जरा मुझे भी टेस्ट कराओ।
पत्नी ने एक बादाम दिया
पति- बस एक ही।
पत्नी- हाँ, बाकी सबका टेस्ट भी ऐसा ही है।

• ढाबला खुर्द (म.प्र.)

आसानी से बनाओ, रंग भरो।

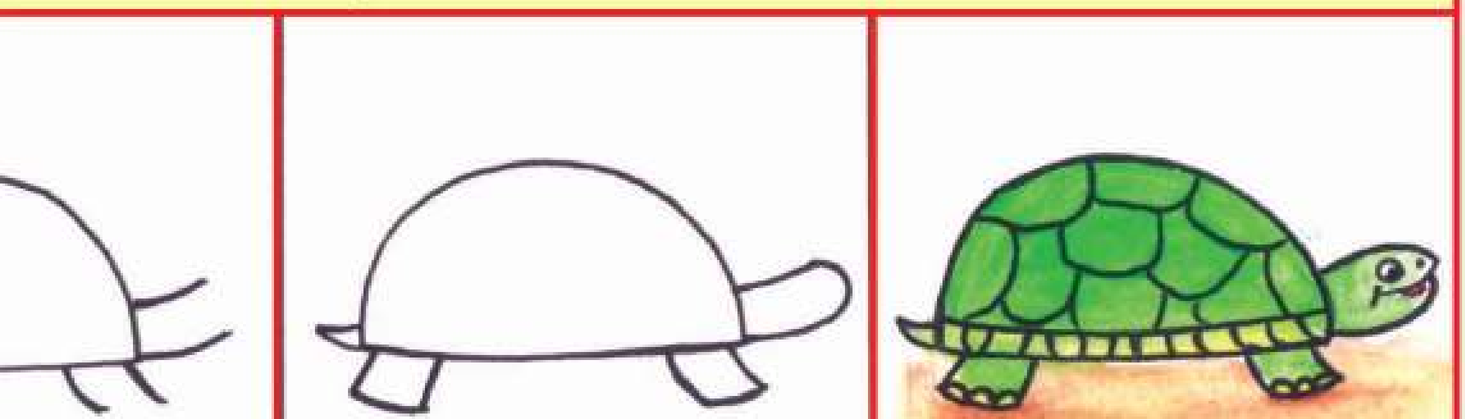

॥ हमारे राज्य वृक्ष ॥

पश्चिम बंगाल का राज्यवृक्ष

सप्तपर्ण

डॉ. परशुराम शुक्ल

मूल एशियावासी पौधा,
भारत में मिल जाता।
अमरीका तक जा पहुँचा यह,
वृक्ष राज कहलाता।
मिट्टी मौसम कैसा भी हो,
अपनी जड़ें जमाता।
चालिस मीटर ऊँचा पौधा,
काम बहुत से आता।
बाग बगीचे सड़क किनारे,
इसको लोग उगाते।
शीतल सघन परम सुखदायी,
छाया में सो जाते।
कुछ पीलापन लिये हरे से,
फूल शरद में आते।
अपनी मधुर गंध से सारा,
वन-उपवन महकाते।
अंग सभी उपयोगी इसके,
औषधि खूब बनाते।
ज्वर खाँसी से कुष्ठ रोग तक,
सबको दूर भगाते॥

• भोपाल (म.प्र.)

आधा अल्पाहार

चित्रकथा : देवांशु वत्स

पुस्तक परिचय

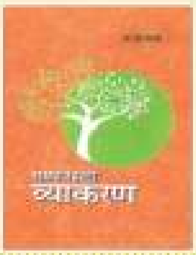

समग्र हिन्दी व्याकरण- किसी भी भाषा में उसके व्याकरण का वही महत्व होता है जो शरीर में हड्डियों का। जैसे हड्डियाँ टेढ़ी-मेढ़ी, या अवविकसित होने पर शरीर असुन्दर तो दिखता ही है साथ ही उसे सामान्य कार्य व्यवहारों में भी असुविधा होती है वैसे ही व्याकरण का अज्ञान अथवा अशुद्धियाँ भाषा का सौन्दर्य कम कर उसकी भाव-संप्रेषण की क्षमता को भी प्रभावित करते हैं। आवश्यक होने पर भी, प्रायः व्याकरण को नीरस कठिन मान लिया जाता है और वह अरुचिग्रस्त हो जाता है। डॉ. प्रेम भारती ने अपने सुदीर्घ साहित्यिक व शैक्षिक अनुभव के आधार पर इस समस्या के समाधान स्वरूप सरस, सरल, सुबोध और रुचिकर भाषा शैली में हिन्दी व्याकरण के समस्त अंगों को एक ही ग्रंथ में प्रस्तुत किया है। सरल उदाहरणों और व्याकरण शिक्षण में साहित्यिक विद्या का अभिनव प्रयोग भी रुचिकर बन पड़ा है। यह एक संग्रहणीय, पठनीय और अध्ययन योग्य ग्रंथ है।

लेखक	पृष्ठ	मूल्य
डॉ. प्रेम भारती	११४	२५००/-

प्रकाशन - संदर्भ प्रकाशन, जे-१५४, हर्षवर्द्धन नगर, भोपाल (म.प्र.)

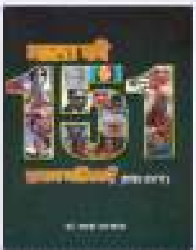

भारत की १५१ प्रथम महिलाएं- हिन्दी साहित्य की जानीमानी लेखिका डॉ. बानो सरताज लिखित इस पुस्तक में अपनी प्रतिभा और कर्तृत्व से विश्वभर में सुख्यात हुई १५१ भारतीय महिलाओं का सचित्र परिचय और उनके कार्यों का उल्लेख संग्रहीत हैं। इन महिलाओं ने अपने अपने क्षेत्र में अग्रणी होने का गौरव अर्जित किया है।

लेखक	पृष्ठ	मूल्य
डॉ. बानो सरताज	३३५	५००/-

प्रकाशन - अपोलो प्रकाशन, २५, सिद्धेश्वर महादेव मंदिर के पीछे,
न्यू पिंक सिटी मार्केट, राजा पार्क, जयपुर (राज.)

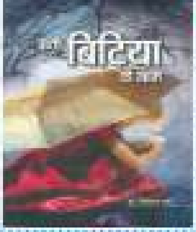

पाती बिटिया के नाम- देवपुत्र के प्रबंध सम्पादक और विख्यात बाल साहित्य सर्जक डॉ. विकास दवे बाल साहित्य जगत में संस्कारक्षम लेखन के लिए एक सुपरिचित नाम है प्रस्तुत पुस्तक में 'पत्र विधा' के माध्यम से, अपनी बेटी हर्षिता के लिए लिखे उनके इन पत्रों में भारतीय संस्कृति, इतिहास और जीवन मूल्यों की रोचक चर्चा उल्लिखित हैं। इन पत्रों में वे सारे विषय समाहित हैं जो एक भारतीय पिता अपनी संतानों को सिखाना चाहता है।

लेखक	पृष्ठ	मूल्य
डॉ. विकास दवे	९६	२००/-

प्रकाशन - संदर्भ प्रकाशन, जे-१५४, हर्षवर्द्धन नगर, भोपाल (म.प्र.)

विद्यालय में कौशल

आलेख : शैलेन्द्र विक्रम

विश्व में संस्कृति एवं शुचिता का वाहक रहा भारतीय परिवेश अपने आधार पर दक्षता का मापदण्ड स्थापित किए हुआ था। परिणाम स्वरूप शेष विश्व भारत की ओर टक–टकी लगाए देख व सीख रहा था। सम्पूर्ण भारत में गाँवों से लेकर शहरों तक सभी के लिए दक्षता अनिवार्य विषय रही है। कृषि, इंजीनियरिंग, मेडिकल व खानपान आदि सभी कुछ कौशल पर ही निर्भर रहा है।

प्राचीन राष्ट्रीय कुशलता के आधार पर वर्तमान भारत तुलनात्मक रूप से बहुत पीछे नजर आता है। उसी गौरव को पुनः प्राप्त करने के लिए सक्षम भारतीय नागरिक बनाने की दिशा में कार्य करना प्रारम्भ किया गया है। इसी हेतु दक्ष–भारती का गठन हुआ। दक्ष–भारती ने स्वरूपतः तीन अलग–अलग मानदण्डों पर कार्य करना प्रारम्भ किया है। (१) कौशल विकास के केन्द्र स्थापित करना, (२) समाज के स्किल प्रधान लोगों को संसाधन उपलब्ध करवाना व (३) अपने विद्यालयों में स्कूल स्किल प्रारम्भ करना।

स्कूल स्किल का विषय विद्यालय के आचार्यों के माध्यम से प्रारम्भ करने का निर्णय किया गया है। उद्देश्य यह रखा गया कि वह विद्यार्थी जो १२वीं पास करके उच्च (हायर) शिक्षा के लिए आगे पढ़ाई करे या उच्च शिक्षा न ग्रहण करे दोनों ही दशा में उस बच्चे (विद्यार्थी) के पास उसके द्वारा इच्छित विषय में कुशलता होनी चाहिए। १२वीं के बाद अपने जीवन को प्रारम्भ करने के लिए सम्बन्धित छात्र पैसा रुपी महत्वपूर्ण संसाधन की कमी से न परेशान हो। जरूरी नहीं है कि उसका सबसे इच्छित विषय जिसमें कि वह दक्ष (कुशल/प्रवीण) है वह उसे रोजगार का साधन ही बनाये।

ध्यातव्य है कि बारहवीं के बाद विद्यार्थी जिस स्किल में दक्ष है वह उसी विषय में आगे की पढ़ाई कर सकता है या रोजगार का साधन बनाकर आगे की पढ़ाई स्वयं से कर सकता है या स्वयं के आनन्द के लिए भी पढ़ाई व रोजगार एक साथ कर सकता है।

परन्तु व्यवहार में दक्षता का ज्यादातर प्रयोग रोजगार के तौर पर ही किया जाता है। उदाहरण के तौर पर यदि कोई विद्यार्थी कम्प्यूटर के विषय में डाटा इन्ट्री, टैली एवं जी.एस.टी. इन तीन ही विषय की अच्छी समझ प्राप्त कर ले तो वह इसी विषय में बी.सी.ए. व एम.सी.ए. या अन्य अनेक प्रकार की कम्प्यूटर से सम्बन्धित शिक्षा ग्रहण करते हुए साफ्टवेयर अथवा हार्डवेयर के क्षेत्र में अपना प्रिय उद्देश्य पूर्ण कर सकता है। कई विद्यार्थी इसे स्वयं के रोजगार तक ही सीमित मानते हुए जीवन निर्वाह के तौर पर प्रयोग कर सकते हैं। कई विद्यार्थी अपने शौक के तौर पर भी इसे अपना सकते हैं।

इसी प्रकार संगीत, नृत्य, योग, सिलाई, कढ़ाई–बुनाई, मेडिकल, पर्यावरण रक्षण, वृक्षारोपण, कृषि (खेती, डेयरी, पशुपालन) पायलेट, कम्प्यूटर, टाइपिंग, शॉर्ट–हैंड, स्पीकिंग (इंग्लिश, संस्कृत, मंदारिन, फ्रेंच, जर्मन इत्यादि), इंजीनियरिंग (इलेक्ट्रिक, इलेक्ट्रॉनिक सर्वेयर आदि) अनेक विषयों में से छात्र अपने इच्छित किसी एक विषय में दक्षता प्राप्त कर अपना जीवन आसान बना सकता है।

• **दिल्ली**

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क : श्री रोहित द्विवेदी
कौशल विकास संयोजक विद्याभारती
dakshbharti.sss@gmail.com

अंक चित्र

अंग्रेजी के **1** से **10** तक अंकों की सहायता से

मोमबत्ती, घंटी, बंदर, मछली, भैंस, इल्ली, घर,

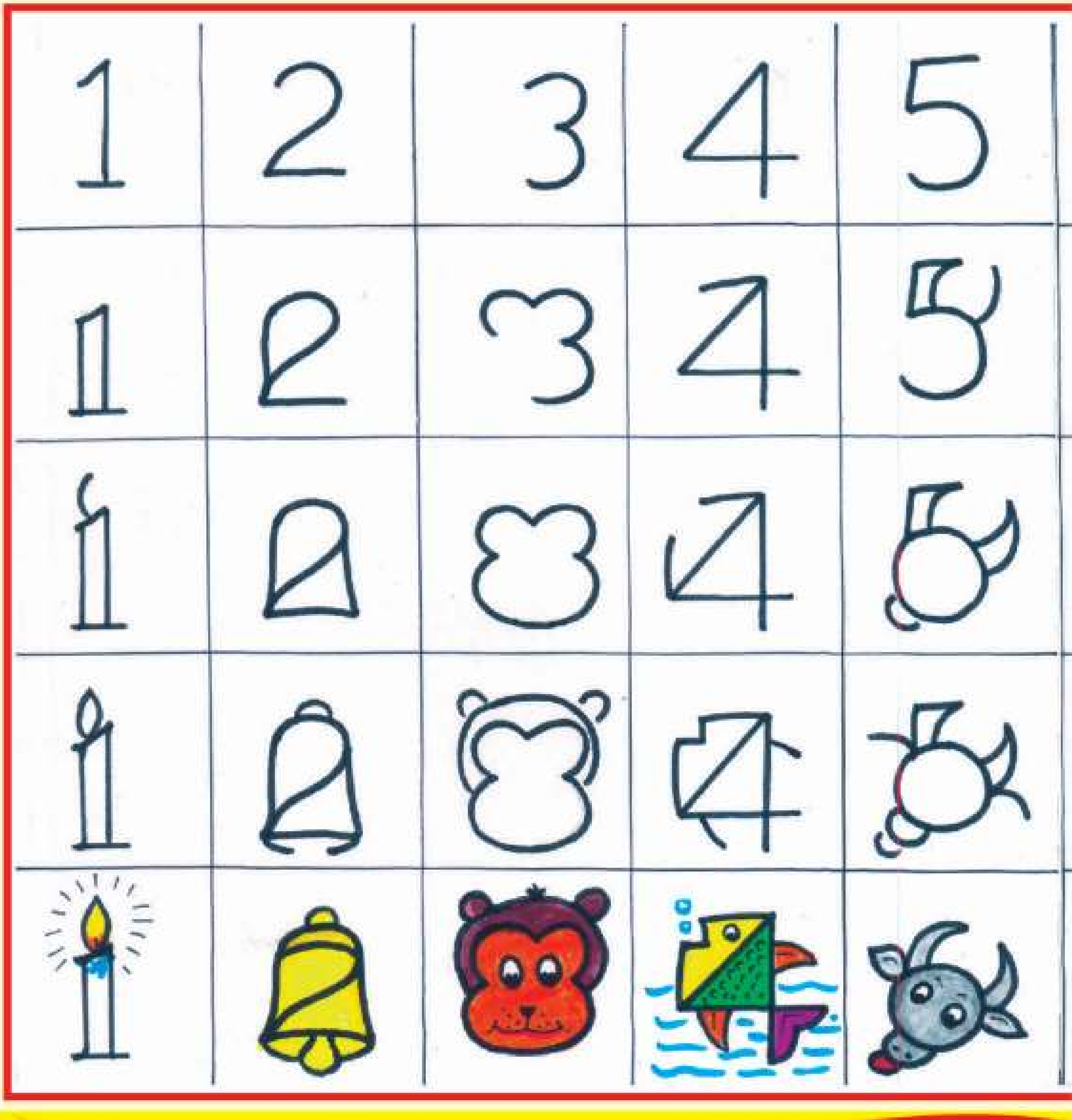

बनाओ

• राजेश गुजर

चित्र बनाना सीखिए और रंग भरिए।

उल्लू, तेंदुआ एवं मिर्च टमाटर के चित्र बने हैं।

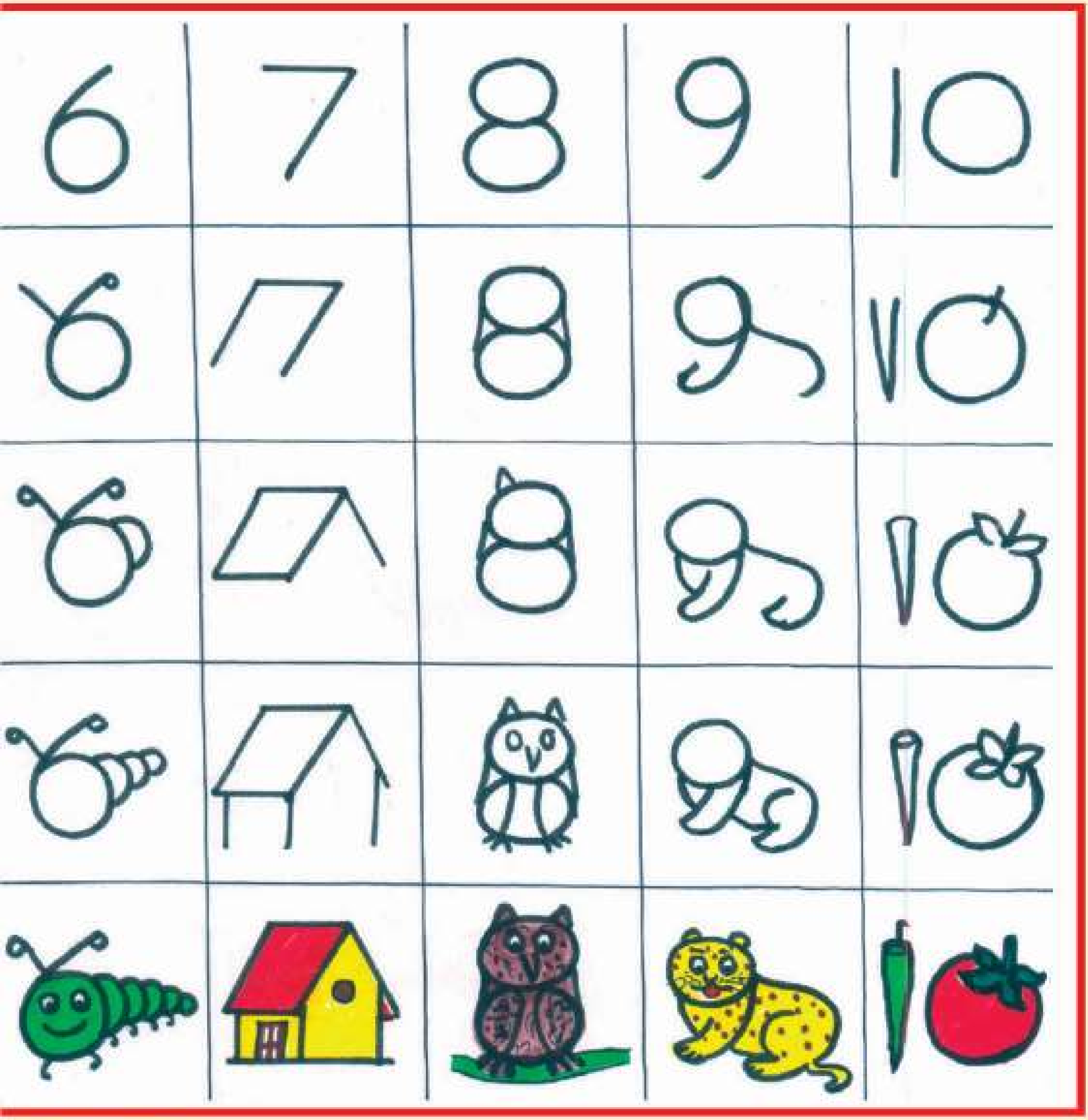

खिलौने और भोला

लघु कथा : मीरा जैन

मालती ने तुनकते हुए रूखे स्वर में कामवाली बाई को ताना मारा– ''कम्मो! ठीक है तू मेहनत करके कमा रही है और बेटे को कान्वेंट स्कूल में पढ़ा रही है अच्छी बात है लेकिन उसे अच्छे संस्कार भी तो दे।''

कम्मो एकदम सहम गई फिर डरते हुए पूछा– ''दीदी! मेरे भोला से कोई गलती हो गई क्या? कल से उसे साथ लेकर नहीं आऊँगी वो तो परीक्षा समाप्त हो गई आज इसलिए– वैसे क्या किया उसने दीदी?''

''किया तो कुछ नहीं इतना बड़ा हो गया है फिर भी बड़ों की बात की कोई कद्र नहीं कब से नीरव उसे अपने साथ खेलने को कह रहा है तीन चार प्रकार के सुन्दर खिलौने भी निकाल कर ले आया लेकिन उसने खेलने से मना कर दिया मैंने भी उससे कहा लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ ऐसी भी क्या जिद।''

इस पर कम्मो ने भोला को डाँटते हुए पूछा– ''क्यो भोला! घर में तो दिनभर खिलौनों की रट लगाये रहता है यहाँ भैया के साथ खेलने में क्या परेशानी है ज्यादा समझदार मत बन जा चुपचाप खेल।''

दस वर्षीय भोला धीरे से बोला– ''मैं नहीं खेलूँगा।

तभी मालती बोली– ''देख ले अपने बेटे को अभी से बात नहीं मानता है बड़ा होकर न जाने क्या करेगा।''

अबकी कम्मो बरस पड़ी भोला पर– ''पड़ेगी एक सब खेलने लग जायेगा बता क्यों नहीं खेलेगा?''

''माँ! ये सभी खिलौने चीन के बने है और विद्यालय में आचार्य जी ने बताया है कि चीन आतंवादियों को सहयोग करता है। इन आतंकियों के कारण हमारे कई सैनिक बलिदान दे चुके हैं। इसलिए वहाँ के सामान का उपयोग करना देशभक्ति के विपरीत व सेना का अपमान है।

भोला के मुख से सत्य सुन मालती झेंप गई अब भोला उसे अपने से कहीं ज्यादा समझदार और बड़ा नजर आ रहा था।

● उज्जैन (म.प्र.)

डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' सम्मानित

कटनी। नगर की प्रख्यात कवयित्री, कथाकार, बाल साहित्यकार एवं राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत शिक्षिका डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' को उनके बाल साहित्य अवदान के लिए कानपुर में बाल साहित्य संवर्धन संस्थान कानपुर ने सम्मानित एवं पुरस्कृत किया। संस्थान के चतुर्थ राष्ट्रीय बाल साहित्यिक आयोजन में देश के विभिन्न स्थानों आगरा, सहारनपुर, बीकानेर, लखनऊ, कानपूर, बूंदी, इन्दौर एवं कटनी से आये नौ बाल साहित्यकारों को सम्मानित कर उनकी श्रेष्ठ चयनित उत्कृष्ट पुस्तकों को पुरस्कृत भी किया गया।

कानपुर के आर्यावर्त सरस्वती उच्च मा. शाला के सभागार में संस्थान के महासचिव रमेश मिश्र 'आनंद', अध्यक्ष

सुरेंद्र गुप्ता 'सीकर' ने अपने सहयोगियों के साथ बाल साहित्यकारों को सम्मानित किया। डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' को श्रीमती कमलादेवी सिंह गौतम स्मृति सम्मान से विभूषित करते हुए शाल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान राशि प्रदान की गई। साथ ही कवि साहित्यकार जगदीश गुप्त को भी सम्मानित किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन चक्रधर शुक्ल ने किया।

है पूरे परिवार के प्यारे
देवपुत्र और बच्चे सारे

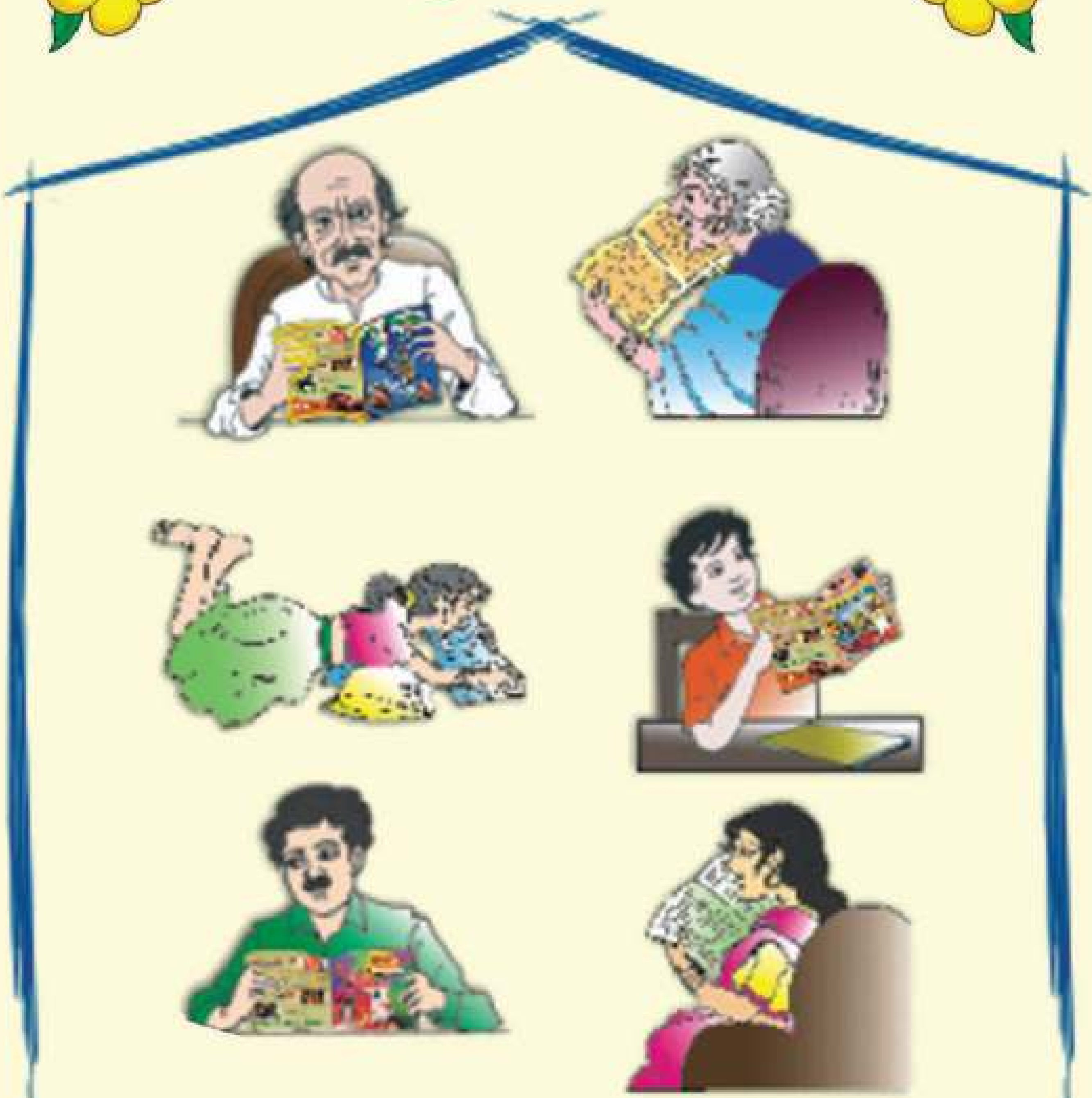

मेरा परिवार भारतीय परिवार

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२०

आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

प्रकाशन तिथि २०/०४/२०१९

प्रेषण तिथि ३०/०४/२०१९

प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है संस्कार फैलाना और अच्छी बात है।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अवश्य देखें

www.devputra.com

एक अंक	२०/- रु.
वार्षिक सदस्यता	१८०/-रू.
त्रैवार्षिक सदस्यता	५००/-रू.
पंचवार्षिक सदस्यता	७५०/-रू.
आजीवन सदस्यता	१४००/-रू.
सामुहिक वार्षिक सदस्यता (कम से कम १० अंक लेने पर)	१३०/-रू. (प्रति सदस्य)

- संस्थाओं की आजीवन सदस्यता १० वर्ष रहेगी।
- सामूहिक सदस्यता वाले सारे अंक एक साथ भेजे जाते हैं।
- सदस्यता के लिए ड्राफ्ट/धनादेश 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के नाम से बनवाइए।
- आनलाईन बैंकिंग से प्राप्त शुल्क की जमापर्ची की छायाप्रति (फोटोकॉपी) भेजना अनिवार्य है।

हमारा विश्वास है कि आपका स्नेह एवं सहयोग पूर्ववत् प्राप्त होता रहेगा।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना